@MahiSandesh MAHI SANDESH https://www.facebook.com/hindimagazinemahi/

साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका

R.N.I. No.
RAJHIN/2018/75539

माही संदेश

घर में ठंडे चूल्हे पर
अगर खाली पतीली है
बताओ कैसे लिख दूं
धूप फाल्गुन की नशीली है
बगावत के कमल खिलते हैं
दिल के सूखे दरिया में
मैं जब भी देखता हूं
आंख बच्चों की पनीली है

अदम गोंडवी

वर्ष : 2 अंक : 2 मई : 2019 पृष्ठ संख्या : 32 मूल्य : 35/-

कहीं चुनावी शतरंज की चाल आपको उल्लू न बना दे!

चुनिये वही जो हो सही

भविष्य की चिंता नहीं करता वर्तमान में रहकर खुश हूं

अगर आपकी पहचान आपके काम से हो तो वह आपके जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि है, अपने काम से अपनी एक विशेष पहचान बनाने वाले राहुल प्रकाश, पुलिस उपायुक्त, यातायात से मशहूर चित्रकार चंद्रप्रकाश गुप्ता के साथ माही संदेश के प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन की विशेष बातचीत

राहुल प्रकाश,
पुलिस उपायुक्त, यातायात
जयपुर कमिश्नरेट

सारणी, बेतुल (मध्य प्रदेश) में जन्मे राहुल प्रकाश के पिता डॉ. विश्वनाथ सिंह अध्यापक थे और उन्हें भी पिता की तरह अध्यापक या व्याख्याता बनना था, समय के साथ सपने और बड़े होते गए दिल्ली में जेएनयू में एडमिशन लिया और तब लगा कि हां सिविल सर्विस के जरिए देश के लिए कुछ खास किया जा सकता है, हालांकि पहले प्रयास में साक्षात्कार तक पहुंचे मगर सफलता नहीं मिली, लेकिन दूसरे प्रयास में आईपीएस रैंक हासिल की और यहां से शुरू होती है वर्ष 2006 बैच के आईपीएस राहुल प्रकाश के देखे सपनों को सच करने की शुरुआत...।

कबीर व सम्यक दो बच्चों के पिता राहुल प्रकाश की पत्नी शुचि त्यागी भी आईएएस अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। राहुल कहते हैं कि पत्नी का सपोर्ट हमेशा रहा, ड्यूटी के दौरान घर से बाहर होने पर वह अपने दफ्तर के साथ घर की जिम्मेदारी भी बखूबी संभालती हैं।

हर जगह हुई काम की सराहना

आईपीएस की कड़ी ट्रेनिंग के बाद अजमेर शहर से ट्रेनी आईपीएस के रूप में पहले कदम की शुरूआत हुई, राहुल प्रकाश की पहली पोस्टिंग धौलपुर में पुलिस अधीक्षक के रूप में हुई, धौलपुर

के बाद जोधपुर ईस्ट डीसीपी, जोधपुर ग्रामीण पुलिस अधीक्षक, फिर भरतपुर पुलिस अधीक्षक, अलवर पुलिस अधीक्षक, फिर पाली पुलिस अधीक्षक और अब डीसीपी यातायात, जयपुर के रूप में कार्यरत हैं, खास बात यह है कि इन सभी जगह राहुल ने अपने काम की शैली से अपनी एक विशेष पहचान बनाई है।

राहुल कहते हैं कि जयपुर में धीरे-धीरे ट्रैफिक बढ़ रहा है, रोड़ इंजीनियरिंग, कंस्ट्रक्शन एरिया, पार्किंग स्पेस, किसी भी यातायात व्यवस्था को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, इसलिए इस ओर भी ध्यान देने की जरूरत है साथ ही लोगों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक भी बना रहे हैं, समय-समय पर विभाग द्वारा कई जागरूकता के कार्यक्रम संचालित किए जाते हैं।

शेष पृष्ठ 5 पर

माही संदेश (राष्ट्रीय पत्रिका)

संस्थापक डॉ. मदनलाल शर्मा*

प्रधान संपादक रोहित कृष्ण नंदन (98874-09303)

प्रबंध निदेशक डॉ. प्रेम प्रकाश शर्मा*

सह-संपादक डॉ. महेश चन्द*, नित्या शुक्ला*, मधु गुप्ता*, वंदना शर्मा*, नीरा जैन*

आईटी सलाहकार सोनू श्रीवास्तव*

ब्यूरो चीफ (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र) रमन सैनी* 9717039404

संवाददाता ईशा चौधरी*, दीपक कृष्ण नंदन*, श्री राम शर्मा*, विनोद चौधरी*

अकादमिक सलाहकार डॉ. सुधीर सोनी*

बिजनेस हैड अनुराग सोनी* 9828198745

मार्केटिंग सलाहकार अनिल कुमार शर्मा*

मार्केटिंग एग्जीक्यूटिव रिंकी सैनी*, अजय शर्मा (8368443640)

परामर्श समिति

डॉ. गीता कौशिक*, बालकृष्ण शर्मा*, डॉ. रश्मि शर्मा*, डॉ. मीना शर्मा*, डॉ. नीति मिश्रा*, प्रकाश चन्द शर्मा*

संरक्षक मंडल रामेश्वरी देवी*

डिजाइनिंग सागर कम्प्यूटर 79765-17072

मुद्रण कांति ऑफसेट प्रिन्टर्स 9024765603

पृष्ठ संख्या : 32 आवरण सहित
प्रकाशन तिथि : प्रत्येक माह की 01 तारीख

: कार्यालय :

50-51 ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

ई-मेल :

mahisandesh31@gmail.com

मोबाइल : 9887409303

पत्रिका में प्रकाशित आलेख-रचनाएं, साक्षात्कार लेखकों के निजी विचार हैं। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जयपुर होगा। चित्र व लेख के कुछ आंकड़ों को इंटरनेट वेबसाइटों से संकलित किया गया है।

नाम के आगे अंकित (*) चिह्न अवैतनिक है।

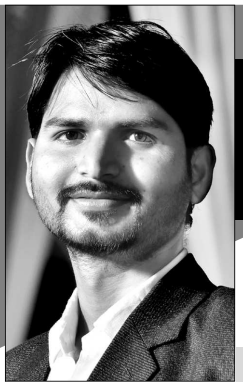

हर शाख पर उल्लू बैठा है?

रोहित कृष्ण नंदन
प्रधान संपादक
माही संदेश
mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश का दूसरे वर्ष का दूसरा अंक आपके हाथों में हैं, दिन प्रतिदिन आप सभी जुड़ रहे हैं, एक साहित्यिक व सामाजिक मूल्यों की मासिक पत्रिका जब जन मानस के हृदय पटल पर अपना एक-एक पृष्ठ अंकित करे और यह बात स्वयं आप कहें तो मन का प्रसन्न होना स्वाभाविक है। आपका यह जुड़ाव यूं ही बना रहे और कदम दर कदम बढ़ता रहे।

अभी लोकसभा चुनाव का दौर जारी है, और इसी माह नई सरकार का चुनाव भी हो जाएगा, जनता के हाथों में चुनाव है अधिकांश सीटों पर मतदान हो चुका है और कई सीटों पर मतदान होना अभी बाकी है, पुराने मुद्दे, पुराने वादे चुनाव आते ही नए हो जाते हैं और सरकार बनते ही भुला दिए जाते हैं, वो वादे वो मुद्दे जिनके भरोसे सरकार बनाकर जनता को उल्लू बनाया जाता है। मशहूर शेर की पंक्ति याद आई 'हर शाख पे उल्लू बैठा है, अंजाम ए गुलिस्तां क्या होगा'? बात कड़वी लगेगी लेकिन सच है अब तक का इतिहास उठाकर देखा जाए तो हकीकत सामने आएगी कि किन मुद्दों पर चुनाव लड़ा और किन वादों पर सरकार बनी और कितने वादों पर अमल किया गया, पार्टी कोई भी हो सभी ने जनता को उल्लू बनाना ही सीखा है, फैसला हमें ही करना है कि हम मदारी चुनने जा रहे हैं संसद में तमाशा करने वाले या अपने जनप्रतिनिधि। कहते हैं जब जागो तभी सवेरा पिछले महीने भी कहा था कि इस बार तय कर लीजिए कि न पार्टी, न जाति, वही चुनेंगे जो होगा सही, बस फिर देखिए देश का विकास और जनता की आवाज कभी दबाई नहीं जाएगी। देश के मशहूर शायर वसीम बरेलवी का एक शेर याद आया कि

सफर पे आज वही कश्तियां निकलती हैं,
जिन्हें खबर है हवाएं भी तेज चलती हैं।

शेष फिर

एक नजर यहां भी

बढ़ता युवा

सरकार से अपेक्षा वेटलिफ्टिंग के लिए करें मदद - गोविंद सिंह — **रोहित कृष्ण नंदन** — 6

देश के लिए जीतने हैं कई पदक-प्रिया कुंतल

विशेष

मजदूर दिवस : औचित्य और अवधारणा — **प्रो. शोभा जैन** — 9

जीवन संदेश

नए युग के अग्रदूत राजा राममोहन राय — **निशा नंदिनी भारतीय** — 11

यात्रा संदेश

यात्रा ने जोड़ दिया अनमोल रिश्ता — **कमलेश शर्मा** — 14

जरूरी बात

मोनोफोबिया : अकेले होने का डर — **शैली श्रीवास्तव** — 16

फैशन संदेश

प्लाजो से पाएं समर सीजन में स्टाइलिश लुक — **अदिति** — 18

कथा संदेश

साक्षरता — **वर्तिका अग्रवाल** — 19

मजदूर — **वीनू शर्मा** — 19

काव्य कलम — 20

उपन्यास

उड़ती चील का अण्डा — **डॉ. मदन लाल शर्मा** — 22

गतिविधियां — 23

पुस्तक संदेश

स्त्री के मनोभावों का खूबसूरत चित्रण 'मेरी उम्र की महिलाएं' — **नित्या शुक्ला** — 26

सिनेमा संदेश

'श्यामची आई' वनमाला — **शिशिर कृष्ण शर्मा** — 27

आवरण चित्र- अनिल खुबानी*

प्रोफेशनल फोटोग्राफर अनिल खुबानी की हर तस्वीर एक कहानी कहती है, ये जयपुर फोटोग्राफर्स क्लब के संस्थापक भी हैं।

पाठक संदेश

कीर्ति 'रतन'
दिल्ली

अक्टूबर का अंक पढ़ा
जब माही संदेश
जाने कितने रूप समेटे
कितने-कितने भेष
कितने-कितने भेष
बहुत बतलाया हमको
शहीद रमेश, मुंशी पटेल
निरूपा से मिलवाया हमको
यही नहीं बस और बहुत कुछ
*आया लेकर पत्रिका **'माही संदेश'***
का अंक अक्टूबर

संपादक की पसंद

एक मुद्दत हुई
टूट कर भी खड़ा हूं
उसने चाहा था
उसे टूटकर चाहा जाए

कवि- अवनींद्र 'मान'

विज्ञापन

ऐसे उम्मीदवार जो अपना उत्तम कला कौशल रखते हों मगर आगे बढ़ने का मुकाम नहीं मिला, सभी से साग्रह निवेदन और आमंत्रण है कि अपनी हस्तलिखित या टंकित प्रोफाइल ई-मेल करें और आपको ग्रूम-अप करने का एक अवसर हमें अवश्य दें ।

मेरा अनुभव और संपर्क निश्चित रूप से आपके हित में वृद्धि करने के साथ-साथ जीवन की असलियत से भी रूबरू कराकर आज के मायने बेहतर और कमाऊ बनने में मददगार होगा।

royalensign105@gmail.com
or fix an appointment calling me on
7877756814

क्रमशः पृष्ठ 2 से

भविष्य की चिंता नहीं करता....

मुश्किलों को आसानी से किया हल

राहुल ने बातचीत के दौरान बताया कि धौलपुर में पहली पोस्टिंग चैलेंजिंग रही, जब यहां पुलिस अधीक्षक के रूप में आया तो डकैतों का काफी आतंक था, अक्सर व्यापारियों के अपहरण की घटनाएं आए दिन होती रहती थी, अपनी टीम के साथ हमने काफी हद तक डकैतों के आतंक से आमजन को राहत प्रदान की, भरतपुर, अलवर की पोस्टिंग के दौरान अपराधों पर काफी लगाम लगाई। जोधपुर ग्रामीण एसपी के रूप में भी चैलेंजिंग जॉब रही जहां मादक पदार्थों की तस्करी काफी मात्रा में होती थी, अपने साथियों के साथ हमने न केवल मादक पदार्थों को काफी मात्रा में पकड़ा बल्कि व्यक्ति विशेष जो कि नशे के आदी हो गए थे उनके लिए नशामुक्ति अभियान के तहत चिकित्सकीय देखरेख व मार्गदर्शन भी उपलब्ध कराया।

कहानियां लिखना है बेहद पसंद

आईपीएस राहुल प्रकाश एक लेखक के रूप में भी समाज को सार्थक संदेश देते रहते हैं, साहित्यिक अभिरुचि रखने वाले राहुल प्रकाश ने कई कहानियां लिखी हैं जो कि कई समाचार पत्र व पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं, उनकी लिखी पहली कहानी है 'मेरा कातिल कौन' दूसरी कहानी 'हत्या' तीसरी कहानी 'हारा प्यार' चौथी कहानी 'निर्वाण' और यह कहानी लेखन यूं ही जारी है।

युवाओं के लिए संदेश

राहुल प्रकाश कहते हैं कि युवाओं को जीवन में हमेशा सकारात्क रहना चाहिए क्योंकि नकारात्मकता जीवन की सारी ऊर्जा को समाप्त कर देती है, जीवन में सफलता का मूल मंत्र यही है कि स्वस्थ रहें, परिवार को खुश रखें और अपने काम को ईमानदारी से करें।

सरकार से अपेक्षा वेटलिफ्टिंग के लिए करें मदद - गोविंद सिंह

गरीब व होनहार विद्यार्थियों को मिलेगा खेलों में बढ़ावा

जब बढ़े कदम

गोविंद सिंह का जन्म राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित एक छोटे से गांव ताल फराह के मध्यवर्गीय परिवार में ओमकार सिंह के यहां 26 दिसंबर 1993 के दिन हुआ गोविंद सिंह का बचपन बहुत ही संघर्ष में रहा गोविंद सिंह तीन भाई-बहनों में सबसे बड़े थे मां की तबीयत हमेशा खराब रहती थी क्योंकि वह दिल की मरीज थी, पिता कामकाज के सिलसिले में घर से बाहर रहते थे। सिंह की प्रारंभिक शिक्षा कक्षा 1 से 6 तक गांव के ही जयदेव विद्या मंदिर तथा सातवीं से दसवीं तक गांव के राजकीय आदर्श माध्यमिक विद्यालय में हुई, आगे की पढ़ाई बाल विकास विद्या मंदिर, नगर में हुई तथा स्नातक की पढ़ाई के लिए मथुरा के एस एम डिग्री कॉलेज में बीएससी साइंस में प्रवेश लिया। स्नातक की पढ़ाई के साथ-साथ ही सिंह आर.जी. मेमोरियल पब्लिक स्कूल में साइंस के अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएं देने लगे जिससे उनकी आगे की पढ़ाई सुचारू रूप से चल सके लेकिन खत्म होते ही 2013 में रोड एक्सीडेंट में पैर फ्रैक्चर हो गया मानो दुखों का पहाड़ टूट पड़ा हो लेकिन इसी दौरान 2014 में राष्ट्रमंडल खेलों के प्रसारण के दौरान, टीवी पर भारतीय वेटलिफ्टर सतीश शिवा लिंगम को वेट उठाते देखा और इसी ने उनके जीवन को नई दिशा दी उनका सपना भारतीय सेना में एक अधिकारी के रूप में सेवाएं देने का था लेकिन हाइट कम होने के कारण उनका सपना टूट गया अब तो उनकी दुनिया सिर्फ खेलों तक सिमट कर रह गई।

संघर्ष के साथ मिली सफलता

जब सिंह ने सतीश शिवा लिंगम व अजय सिंह शेखावत को पहली बार वेट उठाते हुए देखा तो मालूम हुआ कि कोई ऐसा भी खेल होता है, उनके लिए भगवान बनकर आए उनके चचेरे भाई घनेद्र सिंह जिन्होंने तत्कालीन समय में जिला स्तरीय प्रतियोगिता में पदक जीता था उन्होंने सिंह की खेल के प्रति लगन देखी और यहीं से शुरू हुआ खेलों का

सफर उन्होंने पहली बार घनेंद्र सिंह के साथ जिम देखा और कोच मनीष भान सिंह से मुलाकात हुई दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद उन्होंने अभ्यास शुरू किया और ट्रायल पास करके राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ किस्मत ने यहां साथ दिया और सीनियर पावर लिफ्टिंग राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में डेड लिफ्ट में रिकॉर्ड बनाते हुए कांस्य पदक जीता यह दिन था 2 अगस्त, 2014 और फिर राष्ट्रीय प्रतियोगिता में सातवां स्थान प्राप्त किया सिंह रोजाना 3-3 घंटे अभ्यास करते हैं। वेट लिफ्टिंग तथा पावर लिफ्टिंग में 11 बार राज्य स्तरीय पदार्थ का सातवां राष्ट्रीय पदक जीते इसी दौरान उनकी मुलाकात बीएसएफ खिलाड़ी सोनू चौधरी से हुई जो कि खुद एक वेटलिफ्टर थे और गोविंद सिंह के जीवन की दिशा पूरी तरह से बदल गई उन्होंने जिस मूवमेंट का इंतजार था वह बनकर आए सोनू चौधरी और इसी बीच अप्रैल 2015 में गोविंद सिंह ने बीएसएफ कैंप जॉइन कर लिया यहां उनकी मुलाकात कोच गुरमीत सिंह से हुई जो कि विश्व स्तरीय कोच हैं उन्हें गुरमीत सिंह के द्वारा बहुत कुछ सीखने को मिला। **शेष पृष्ठ 7 पर**

देश के लिए जीतने हैं कई पदक-प्रिया कुंतल

प्रेरणा हैं कोच गोविंद सिंह

प्रिया कुंतल का जन्म उत्तर प्रदेश के मथुरा जिले के छोटे से गांव नगला शीशराम में मध्यवर्गीय परिवार में 9 नवंबर 2000 को देवेंद्र सिंह के यहां हुआ प्रिया का बचपन मध्यवर्गीय परिवार के बच्चों की तरह ही व्यतीत हुआ पिता ट्रक ड्राइवर थे लेकिन प्रिया के जन्म के कुछ समय बाद उनके पिता का चयन सीआईएसएफ में ड्राइवर के पद पर हो गया उनकी पोस्टिंग पश्चिम बंगाल में हुई और यहीं से प्रिया की प्राथमिक शिक्षा भी प्रारंभ हुई दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से उनकी दादी जी का एक हाथ कटने की वजह से परिवार वापस गांव में आ गया तथा उनकी आठवीं से दसवीं तक की पढ़ाई हीरा सिंह पब्लिक स्कूल बोरबा से तथा 11वीं 12वीं की पढ़ाई बाबा कढेरा सिंह विद्या मंदिर नगला अक्खा से हुई जब प्रिया 12वीं कक्षा में अध्यनरत थी इसी दौरान उनके सबसे प्रिय दादाजी का आग की चपेट में आने से निधन हो गया और दुर्भाग्य ने उनका पीछा यहीं नहीं छोड़ा दादा जी की मौत के 1 महीने बाद ही उनके ताऊजी रिटा़ कैप्टन मेहताब सिंह का रोड एक्सीडेंट में निधन हो गया जो उनके सबसे ज्यादा प्रेरणा स्रोत थे, दो-दो मौतों ने प्रिया को पूरी तरह से झकझोर दिया।

संघर्ष के साथ मिली सफलता

प्रिया के मन में कुछ कर गुजरने की ऐसी जिद थी कि जब 12वीं का परीक्षा परिणाम आया तो 78 परसेंट अंक लाकर गांव और विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया, प्रिया का सपना एक सैन्य अधिकारी के रूप में देश की सेवा करना था इसीलिए आगे के सपने को पूरा करने के लिए मथुरा के प्रतिष्ठित बीएससी इंजीनियरिंग कॉलेज में प्रवेश लिया अभी प्रिया बीएससी द्वितीय वर्ष की छात्रा है देश के लिए कुछ कर गुजरने की चाह ने प्रिया को एनसीसी में प्रवेश लेने के लिए प्रेरित किया और प्रथम वर्ष में ही डीजी एनसीसी के द्वारा पहले कैंप में बेस्ट पायलट का खिताब भी मिला लेकिन जैसे प्रिया का तो कोई और क्षेत्र ही इंतजार कर रहा हो जून 2018 में उन्होंने एक समाचार पत्र में तथा सोशल मीडिया यूट्यूब पर गोविंद सिंह को वेट उठाते हुए देखा जब सिंह ने अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में प्रदर्शन कर स्वर्ण पदक प्राप्त किया था सिंह के नेपाल से वापस लौटते ही प्रिया ने वेट तथा पावर लिफ्टिंग के बारे में जानना शुरू किया

संघर्ष से मिली सफलता

कोच गोविंद सिंह से खेल की बारीकियों पर बात करना शुरू किया

था, बिना किसी को बताए जब घर पर कोई नहीं होता तो वेट लिफ्टिंग का अभ्यास लाठी की सहायता से करना प्रारंभ किया लेकिन यह चोरी अधिक दिन तक नहीं चली और परिवार वालों ने अभ्यास करते हुए देख लिया और यहीं से शुरू हुआ संघर्षों का दौर परिवार वाले ग्रामीण माहौल तथा लोक लाज के डर और उनकी दकियानूसी बातों को ध्यान में रखकर खेल के क्षेत्र से दूर रहने की हिदायत दी इसी दौरान उन्होंने अपने कोच गोविंद सिंह से अपनी इच्छा व्यक्त की तो सिंह भगवान बनकर आए और प्रिया के लिए वेट लिफ्टिंग सेट प्रदान किया और उनके माता-पिता को इस बात के लिए आश्वस्त किया कि वह एक सफल एथलीट होगी तथा जब प्रिया को तकनीकी परेशानी आने लगी तो मथुरा स्थित गणेशरा स्टेडियम में उनका दाखिला करा दिया दाखिला पर प्रिया की खुशी का ठिकाना ना रहा लेकिन उनकी एक खुशी ज्यादा दिन नहीं चली क्योंकि स्टेडियम में वो राजनीति का शिकार होने लगी अकेली अभ्यास करती तथा प्रतियोगिता के दौरान टीम मेट्स तथा तथाकथित कोच उनको

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में रजत पदक जीत राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपने प्रदर्शन को सुधारते हुए स्वर्ण पदक जीता और फिर राजस्थान के नीमराणा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय चयन ट्रायल में स्वर्ण पदक जीतकर सपनों को साकार करने के लिए कदम बढ़ाया।

बिल्कुल भी सहायता नहीं करते ऐसे मुश्किल समय में उनके कोच गोविंद सिंह ने फिर से कमान अपने हाथों में संभाली और प्रिया को जिला स्तरीय राज्य और राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए भेजने लगे तथा प्रिया ने दूसरे प्रयास से ही अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए।

बस बढ़ते जाना है

राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में रजत पदक जीत राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अपने प्रदर्शन को सुधारते हुए स्वर्ण पदक जीता और फिर राजस्थान के नीमराणा में आयोजित अंतरराष्ट्रीय चयन ट्रायल में स्वर्ण पदक जीतकर सपनों को साकार करने के लिए एक कदम बढ़ाया। अंतरराष्ट्रीय चयन ट्रायल पास करने के बाद 4 से 5 घंटे तक दिन अभ्यास करने लगी, घर से बाहर किराए पर रह कर सही तरीके से खानपान के बिना ही लगनपूर्वक मेहनत करने लगी इस दौरान जिन लोगों ने प्रिया कुंतल को प्रेरणा दी और आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया उनमें पिता देवेंद्र सिंह माता सुनीता देवी और उनके कोच गोविंद सिंह, बहन रिंकी कुंतल पूनम कुमारी तथा गुरमीत सिंह उनके प्रेरणा स्रोत बने, आखिरकार वह दिन आ गया जब प्रिया ने अपने सपने के लिए उड़ना शुरू किया 30 अक्टूबर 2018 की सुबह जयपुर एयरपोर्ट से थाईलैंड के लिए रवाना हुई थाईलैंड में आयोजित प्रतियोगिता के दौरान स्वर्ण पदक ही नहीं बल्कि सब जूनियर 57 किलो भार वर्ग में अंतरराष्ट्रीय नया कीर्तिमान बनाया और यह पल प्रिया और उनके कोच, मोटिवेटर सिंह के लिए यादगार बना, जब वापस भारत आए तो उन्हें ग्रामीणों ने बड़ी धूमधाम से प्रिया का स्वागत किया, प्रिया को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ तथा जाट महासभा द्वारा कई सम्मानों द्वारा अलंकृत किया गया इसी वर्ष अमेरिका में आयोजित होने वाली विश्व चैंपियनशिप में भारत के लिए पदक जीतना है जो कि 9 जून को आरंभ होंगे, प्रिया सरकारी संस्थाओं के खेल के प्रति नकारात्मक रवैए से नाराज हैं उन्होंने बताया कि खेल संगठनों तथा सरकारी संस्थाओं को खिलाड़ियों की मदद के लिए आना चाहिए जिससे हर खिलाड़ी आगे बढ़कर देश के लिए पदक लेकर आए और सम्मान प्राप्त करे। अभी हाल ही में राष्ट्रीय अचीवर अवॉर्ड समारोह में प्रिया को बेस्ट अचीवर्स अवॉर्ड 2019 राष्ट्रीय आईकॉनिक पर्सनैलिटी अवॉर्ड 2019, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ जाट महासभा द्वारा सम्मानित किया गया और इन्हें 2018 में राज्यपाल अवॉर्ड से भी सम्मानित किया गया।

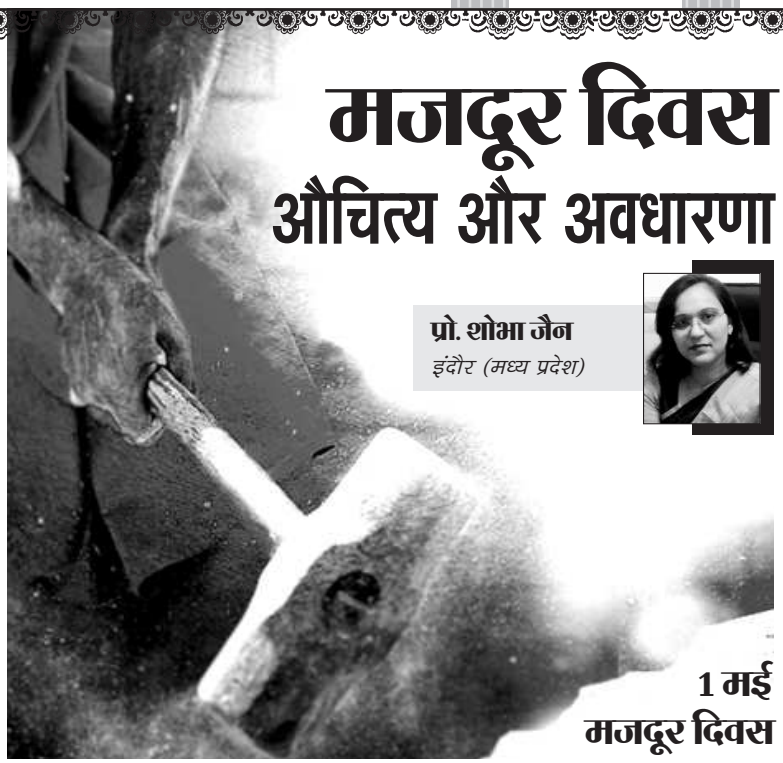

मजदूर दिवस
औचित्य और अवधारणा

प्रो. शोभा जैन
इंदौर (मध्य प्रदेश)

1 मई
मजदूर दिवस

'असलम हसन' जी की कविता 'मैं मजदूर हूँ' की पंक्तियाँ- ''मैं एक मजदूर हूँ/मेरी भुजाओं में फड़कती है धरती/ये तोड़ सकती हैं पहाड़ों को/और मोड़ सकती हैं नदियों की धाराओं को.../मेरे पाँव बड़े बलशाली.../थकते नहीं रुकते नहीं/उठाता हूँ कंधों पर संसार/मेरी मुट्ठी में क्रांति है।'' इस लेख को लिखते समय चिन्तन की पृष्ठभूमि में उक्त पंक्तियाँ ही थी। किन्तु जब मार्क्सवाद का ख्याल आया जिसका मूल कथ्य था - 'मानव समाज वर्ग संघर्ष से बनते और चलते हैं। पूंजीवाद में यह संघर्ष 'बुर्जुआ' कहलाने वाले सत्ताधारी वर्ग और 'सर्वहारा' कहलाने वाले मजदूर वर्ग के बीच होता है।' एक लेख के अनुसार उपरोक्त कथन के संदर्भ में यही कहना सार्थक होगा कि मार्क्स और एंगेल्स का मार्क्सवाद चाहे जितना तार्किक लगे, पर उन्होंने खुद मेहनत-मजदूरी कभी नहीं की बल्कि इसके आस-पास भी नहीं थे। दोनों खुशहाल परिवारों से थे उच्च शिक्षा प्राप्त बुद्धिजीवी थे, न कि श्रमजीवी। एक अध्ययन के अनुसार मार्क्स के पिता नामी वकील थे तो एंगेल्स के पिता नामी उद्योगपति थे। खैर विषय जमीनी लोगों का है ज्ञातव्य है कि वेतन या मजदूरी के बदले अपना श्रम दे कर मजदूर जरूरी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं। और 'मजदूर' शब्द सुनते ही हमारे मानस पटल पर जो एक चित्र उभरता है वो तपती धूप मे नंगे पांव किसी बोझ को ढोते या खींचते हुए, किसी और के खेतों में अपने परिवार का पेट पालते सूरज निकलने से लेकर ढलने तक के समय तक कड़ी मेहनत से घर की राह पकड़ते किसी गरीब की छवि के रूप में उभरता है। जबकि मजदूर तो हम सभी हैं दरअसल हमारा कार्य, वर्ग विभाजन कर देता है। मजदूरी का अर्थ सेवा है फिर वो सड़क हो, खेत हो, फैक्ट्री हो या कोई शानदार ऑफिस। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था, 'किसी देश की तरक्की उस देश के कामगारों और किसानों पर निर्भर करती है।' सत्यता यही है कि वर्ग 'चेतना' न होने के चलते किसी को भी अपने महत्व का अंदाजा ही नहीं। दरअसल में हमारा ध्यान वर्ग संघर्ष पर केन्द्रित है। सम्भवत: अशिक्षा के चलते वर्ग संघर्ष की जो खाई गहरा रही है जिससे अशिक्षित वर्ग अपने अधिकारों और उत्तरदायित्वों की जानकारी के अभाव में सरकारी योजनाओं और सुविधाओं से दूर है वो केवल अपने श्रम पर केन्द्रित है उसके बदले मिलने वाले वेतन और अन्य सुविधाओं का उसे पूर्णत: बोध ही नहीं। जबकि ऑफिस में बैठे कर्मचारी को अपनी समय सीमा से लेकर अपनी कार्य सीमा बल्कि वेतन वृद्धि पदोन्नति तक के हर एक पहलू की सही पर पूरी जानकारी होती है। इनके जीवन स्तर में जो थोड़ा बहुत सुधार या आत्म विश्वास देखा जा सकता है वह भी जागरूकता की कमी के चलते इनसे दूर ही रहता है इसलिए मजदूर शब्द को उच्चारित करते ही हमारे भीतर एक असहाय विवश मजबूर मनुष्य की छवि बनती है प्राय: सभी की 'मजदूर दिवस' को लेकर इसी तरह की अवधारणा रही है। सबसे पहले मजदूर शब्द की परिभाषा में वर्ग से जन्मा संघर्ष खत्म किया जाय तभी इसका औचित्य रह जायेगा क्योंकि अपने कार्य को अपनी मेहनत लगन श्रम के द्वारा अपनी मानवीय शक्ति को बेच कर जो कार्य को अंतिम रूप दे वही 'मजदूर'। इनकी चेतना की बात करें तो हम देखते हैं यह लगभग शून्य ही है किसी भी अप्रिय घटना के समय हम सर्वाधिक

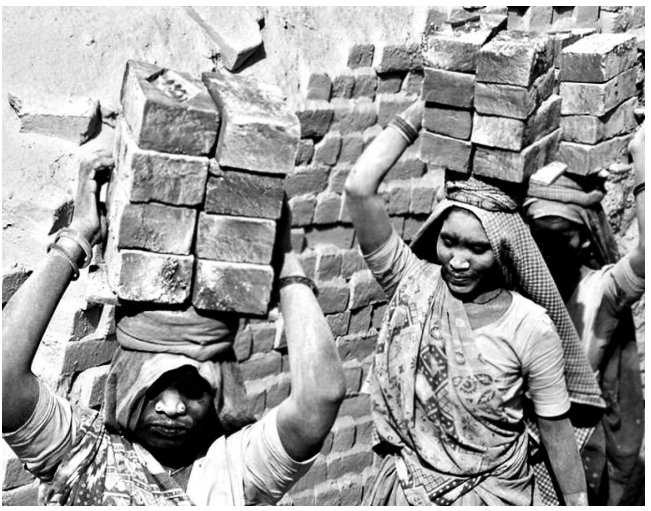

भीड़ मजदूर वर्ग की ही देखते हैं इनके कार्य स्थल इतने विषम और प्रतिकूल होते हैं कि वहाँ आये दिन काम पर मजदूरों की अकस्मात मृत्यु की घटनायें होती रहती हैं सरकार की ओर से उन्हें जो सहायता की जाती हैं अक्सर उसकी सही जानकारी का अभाव ही पाया जाता है वहीं भवन व अन्य सन्निर्माण प्रकियाओं में कार्यरत मजदूरों के मेधावी बच्चों को शिक्षा के प्रति प्रोत्साहित करने हेतु भी शासन द्वारा बहुत सी सुविधाएं दी जाती हैं जिनकी जानकारी का अभाव उन्हें उन सुविधाओं के लाभ से वंचित कर देता है। मजदूर दिवस की शुरुआत हुए सवा सौ साल से अधिक समय बीत चुका है निश्चित ही अब पहले से बेहतर स्थिति है किन्तु आज भी लाखों करोड़ों बच्चे बाल-श्रम का दंश झेल रहे हैं और गर्भवती महिलाएं भी अवकाश पाने के लिए संघर्ष कर रही होती हैं। किन्तु यह स्थति एक शिक्षित आत्मविश्वासी महिला अथवा पुरुष के साथ कम देखने को मिलती है। कहने का अर्थ मजदूर दिवस का औचित्य तभी वर्ग संघर्ष से मुक्त वर्ग चेतना के साथ इसके महत्व के साथ इसे देश में मनाया जाए। क्योंकि मजदूर तो हम सभी है अंतर केवल जागरूकता एवं हमारे संघर्ष के तरीकों का है। बेहतर हो की समाज के इस वर्ग को अपने अधिकारों और सामर्थ का सही समय पर बोध हो सके जिससे एक नई अवधारणा के साथ इस दिवस को सार्थक बनाया जा सके। समय के साथ जब परिवर्तन शाश्वत है तो इतना समझ लेना चाहिए की समय की रेखा को अपने बाजुओं की सुई से पार करता, इस वीरान धरती पर झोंपड़ी से लेकर महलों का निर्माण करता, अपने हाथों से पर्वत का सीना चीरकर रास्ते का निर्माण करने वाला, मजदूर जिसे श्रमिक भी कहते हैं उसके बिना देश की उन्नति की कल्पना भी संभव नहीं और यह आत्मविश्वास भारत के श्रमिकों में जगाना ही मजदूर दिवस को औचित्यपूर्ण बनाता है ।

क्रमशः पृष्ठ 5 से

उन्होंने उनके साथ ढाई वर्षों तक अभ्यास किया सिंह बताते हैं कि उनके मार्गदर्शन के द्वारा ही गोविंद सिंह को सबसे अधिक प्रभावित किया लेकिन इसी बीच कुछ पारिवारिक कारणों से बीएसएफ कैंप छोड़कर घर आ गए उनकी इस खेल के जीवन में सबसे ज्यादा प्रेरणा का स्रोत रहे कोच गुरमीत सिंह जी, सोनू चौधरी, करण चौधरी, मनीष भान सिंह उनकी छोटी बहन रेखा कुमारी, भाई रविकांत तथा अंतर्राष्ट्रीय खिलाडी प्रिया सिंह।

उपलब्धियां

गोविंद सिंह ने कुल 11 बार राज्यस्तरीय प्रतियोगिताओं में स्वर्ण रजत तथा कांस्य पदक एवं 7 बार राष्ट्रीय प्रतियोगिता में दो गोल्ड के साथ 7 पदक जीते हैं एवं एक अन्तराष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए थाईलैंड में दो स्वर्ण पदक तथा वर्ष 2017 में नेपाल में आयोजित अंतरराष्ट्रीय गेम्स में दो स्वर्ण पदक जीते लेकिन सिंह ने बताया उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी छात्रा प्रिया सिंह के द्वारा अंतरराष्ट्रीय पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में अंतरराष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाते हुए स्वर्ण पदक जीतना है

बस बढ़ते जाना है

गोविंद सिंह का सपना वर्ल्ड चैंपियनशिप तथा राष्ट्रमंडल खेलों में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीतना है तथा ऐसे खिलाड़ी तैयार करना जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व कर सकें, आज के समय में सबसे बड़ी अड़चन धन की आती है क्योंकि किसी भी गेम में आगे बढ़ने के लिए एक प्रॉपर डाइट तथा संसाधनों की आवश्यकता होती है गोविंद सिंह बताते हैं कि उन्होंने जिस माहौल में या रहकर अभ्यास किया उस माहौल में खिलाड़ियों के अभ्यास नहीं किया जा सकता सिंह बताते हैं कि वह रोजाना। किलोमीटर पैदल चल कर अभ्यास करने के लिए जाते थे एक क्षेत्रीय जिम में जहां वेटलिफ्टिंग के पूरे संसाधन भी नहीं थे सिंह ने अपनी इस पूरे खेल जीवन में मीडिया परिवार का भी हार्दिक धन्यवाद किया है जिन्होंने उनको हर तरह से सहयोग दिया है गोविंद सिंह सरकार से यही चाहते हैं कि उनके लिए एक वेटलिफ्टिंग जिम्नेजियम की मदद की जाए जिससे कि वह गरीब तथा होनहार खिलाड़ियों को एक अच्छी कोचिंग तथा अभ्यास करा कर राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ले जा सके जिससे उनके क्षेत्र तथा देश का नाम रोशन हो।

नए युग के अग्रदूत
राजा राममोहन राय

राजा राममोहन राय आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे तथा उन्होंने गणित एवं विज्ञान पर अनेक लेख तथा पुस्तकें लिखीं। 1821 में उन्होंने 'यूनीटेरियन एसोसिएशन' की स्थापना की। हिन्दू समाज की कुरीतियों के घोर विरोधी होने के कारण 1828 में उन्होंने 'ब्रह्म समाज' नामक एक नये प्रकार के समाज की स्थापना की।

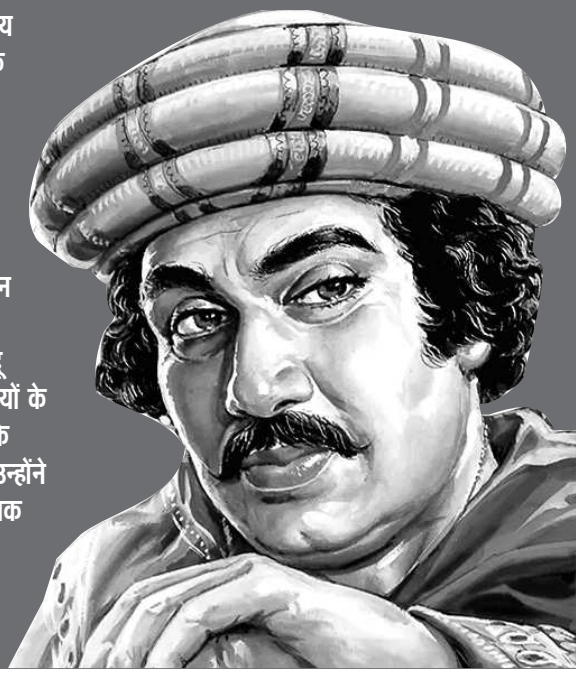

निशा नंदिनी भारतीय
तिनसुकिया, असम

राजा राममोहन राय जी को 'आधुनिक भारतीय समाज' का जन्मदाता कहा जाता है। वे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आंदोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव-जागरण युग के पितामह थे। धार्मिक और सामाजिक विकास के क्षेत्र में राजा राममोहन राय का नाम सबसे अग्रणी है। राजा राम मोहन राय ने तत्कालीन भारतीय समाज की कट्टरता, रूढ़िवादिता एवं अंध विश्वासों को दूर करके उसे आधुनिक बनाने का प्रयास किया।

राजा राममोहन राय का जन्म 22 मई 1772 ई. को राधा नगर नामक बंगाल के एक गांव में, पुराने विचारों से सम्पन्न बंगाली ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में अरबी, फारसी, अंग्रेजी, ग्रीक, हिब्रू आदि भाषाओं का अध्ययन किया था। हिन्दू, ईसाई, इस्लाम और सूफी धर्म का भी उन्होंने गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया था। 17 वर्ष की अल्पायु में ही वे मूर्ति पूजा विरोधी हो गये थे। वे अंग्रेजी भाषा और सभ्यता से काफी प्रभावित थे। उन्होंने इंग्लैंड की यात्रा की। धर्म और समाज सुधार उनका मुख्य लक्ष्य था। वे ईश्वर की एकता में विश्वास करते थे और सभी प्रकार के धार्मिक अंधविश्वास और कर्मकांडों के विरोधी थे। अपने विचारों को उन्होंने लेखों और पुस्तकों में प्रकाशित करवाया। किन्तु हिन्दू और ईसाई प्रचारकों से उनका काफी संघर्ष हुआ। परन्तु वे जीवन भर अपने विचारों का समर्थन करते रहे और उनके प्रचार के लिए उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की।

जब वे मुश्किल से 15 वर्ष के थे। तब उन्होंने बंगाल में एक छोटी सी पुस्तिका लिखी थी। जिसमें उन्होंने मूर्ति पूजा का खंडन किया था। जिसके सम्बन्ध में उनका कहना था कि वह वेदों में नहीं है। नवयुवक राममोहन को इसके लिए बहुत कष्ट उठाने पड़े। उन्हें कट्टरवादी परिवार से निकाल दिया गया और उन्हें देश निकाले के रूप में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ा। तथापि उन्होंने ईश्वर प्रदत्त परिस्थितियों से पूर्ण लाभ उठाया। उन्होंने दूर-दूर तक यात्राएं की और इस प्रकार बहुत सा ज्ञान और अनुभव संचित किया। राममोहन राय को मूर्ति पूजा एवं परम्पराओं के विरोध के कारण अपना घर भी छोड़ना पड़ा था। उन्होंने तिब्बत की यात्रा की। तो उनके क्रान्तिकारी विचारों के कारण वहां के लामा भी उनके विरोधी हो गये। वे अरबी और फारसी पहले से ही जानते थे। अब उन्होंने संस्कृत की भी योग्यता प्राप्त कर ली। उन्होंने अंग्रेजी, फ्रेंच, लैटिन, हिब्रू और ग्रीक का भी कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया था। एकेश्वरवादी राममोहन राय ने जैन, इस्लाम आदि धर्मों का अध्ययन किया था। वे संसार के महत्त्वपूर्ण धर्मग्रंथों का मूल रूप में अध्ययन करने में समर्थ थे। इस कारण वे संसार के सब महत्त्वपूर्ण धर्मों की तुलना करने में सफल हो गये। विश्व धर्म की उनकी धारणा किन्हीं संश्लिष्ट सिद्धांतों पर आधारित नहीं थी। अपितु विभिन्न धर्मों के गम्भीर ज्ञान पर ही आधारित थी। उन्होंने वेदों और उपनिषदों का बंगला में अनुवाद किया। वेदान्त के ऊपर अंग्रेजी में लिख कर उन्होंने यूरोप तथा अमेरिका में भी बहुत ख्याति अर्जित की।

राजा राममोहन राय आधुनिक शिक्षा के समर्थक थे। तथा उन्होंने गणित एवं विज्ञान पर अनेक लेख तथा पुस्तकें

लिखीं। 1821 में उन्होंने 'यूनीटेरियन एसोसिएशन' की स्थापना की। हिन्दू समाज की कुरीतियों के घोर विरोधी होने के कारण 1828 में उन्होंने 'ब्रह्म समाज' नामक एक नये प्रकार के समाज की स्थापना की। 1805 में राजा राममोहन राय बंगाल में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कम्पनी की सेवा में सम्मिलित हुए और 1814 तक वे इसी कार्य में लगे रहे। नौकरी से अवकाश प्राप्त करके वे कलकत्ता में स्थायी रूप से रहने लगे और उन्होंने पूर्ण रूप से अपने को जनता की सेवा में लगाया। 1814 में उन्होंने आत्मीय सभा को आरम्भ किया। 20 अगस्त 1828 में उन्होंने ब्रह्म समाज की स्थापना की। 1831 में एक विशेष कार्य के सम्बन्ध में दिल्ली के मुगल सम्राट के पक्ष का समर्थन करने के लिए इंग्लैंड गये। वे उसी कार्य में व्यस्त थे कि ब्रिस्टल में 27 सितंबर, 1833 को उनका देहान्त हो गया। उन्हें मुगल सम्राट की ओर से 'राजा' की उपाधि दी गयी। अपने सब कार्यों में राजा राममोहन राय में स्वदेश प्रेम, अशिक्षितों और निर्धनों के लिए अत्यधिक सहानुभूति की भावना थी। अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह के सम्भव होने के कारण उन्होंने अपने देशवासियों में राजनीतिक जागृति की भावना को प्रोत्साहित करने के लिए जनमत को शिक्षित किया। उन्होंने संभव उपायों से लोगों की नैतिक उन्नति के यथा सम्भव प्रयत्न किए।

वे अपने समय के सबसे बड़े प्राच्य भाषों के ज्ञाताओं में से एक थे। उनका विश्वास था कि भारत की प्रगति व उद्धार केवल शिक्षा के द्वारा हो सकता है। जिसमें पाश्चात्य विद्या तथा ज्ञान की सभी शाखाओं की शिक्षण व्यवस्था हो। उन्होंने ऐसे लोगों का पूर्ण समर्थन किया। जिन्होंने अंग्रेजी भाषा तथा पश्चिमी विज्ञान के अध्ययन का भारत में आरम्भ किया। और वे अपने प्रयत्नों में सफल भी हुए। उन्होंने हिन्दू कॉलेज की स्थापना में सहायता दी। यह संस्था उन दिनों की सर्वाधिक आधुनिक संस्था थी।

राजा राममोहन राय एक धार्मिक सुधारक तथा सत्य के अन्वेषक थे। सभी धर्मों के अध्ययन से वे इस परिणाम पर पंहुचे कि सभी धर्मों में अद्वैतवाद सम्बन्धी सिद्धांतों का प्रचलन है। मुसलमान उन्हें मुसलमान समझते थे, ईसाई उन्हें ईसाई समझते थे, अद्वैतवादी उन्हें अद्वैतवाती मानते थे तथा हिन्दू उन्हें वेदान्ती स्वीकार करते थे। वे सब धर्मों की मौलिक सत्यता तथा एकता में विश्वास करते थे।

अंग्रेज ईसाई मिशनरी ने अंग्रेजी भाषा में 'फ्रेंड ऑफ इण्डिया' नामक एक पत्र जारी किया था। इसी वर्ष गंगाधर भट्टाचार्य ने 'बंगाल समाचार' का प्रकाशन शुरू किया। बंगाल में एक उदारवादी पत्र 'केलकटा जर्नल' जेम्स सिल्क बकिंघम ने अक्टूबर सन् 1818 ई. में शुरू किया। सन् 1821 ई. में ताराचंद्र दत्त और भवानी चरण बंधोपाध्याय ने बंगाली भाषा में साप्ताहिक पत्र 'संवाद कौमुदी' निकाला था। लेकिन दिसंबर 1821 ई. में भवानी चरण ने संपादक पद से त्याग पत्र दे दिया। तो उसका भार राजा राममोहन राय ने संभाला। अप्रैल 1822 ई. में राजा राममोहन राय ने फारसी भाषा में एक साप्ताहिक अखबार 'मिरात-उल-अखबार' नाम से शुरू किया। जो भारत में पहला फारसी अखबार था। साम्राज्यवादी ब्रिटिश सरकार को राजा राममोहन राय के धार्मिक और इंग्लैण्ड की आयरलैंड विरोधी निति की आलोचना पसंद नहीं आई। परिणामस्वरूप सरकार ने प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाने के लिए अध्यादेश जारी किया। जिसके विरोध में राजा राममोहन राय ने 'मिरात-उल-अखबार' का प्रकाशन बंद कर दिया। राजा राममोहन राय ने समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लिए भी कड़ा संघर्ष किया था। उन्होंने स्वयं एक बंगाली पत्रिका 'संवाद-कौमुदी' आरम्भ की और उसका सम्पादन भी किया। यह पत्रिका भारतीयों द्वारा सम्पादित सबसे पुरानी पत्रिकाओं में से थी। उन्होंने 1833 ई. के समाचार पत्र नियमों के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन चलाया। उन्होंने सर्वोच्च न्यायालय को एक स्मृति-पत्र दिया। जिसमें उन्होंने समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लाभों पर अपने विचार प्रकट किए थे। समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लिए उनके द्वारा चलाये गये आन्दोलन के द्वारा ही 1835 ई. में समाचार पत्रों की आजादी के लिए मार्ग बना।

राजा राम मोहन राय के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी। सती प्रथा का निवारण। उन्होंने ही अपने अथक प्रयासों से सरकार द्वारा इस कुप्रथा को गैर-कानूनी दंण्डनीय घोषित करवाया। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा को मिटाने के लिए प्रयत्न किया। उन्होंने इस अमानवीय प्रथा के विरुद्ध निरन्तर आन्दोलन चलाया। यह आन्दोलन समाचार पत्रों तथा मंच दोनों माध्यमों से चला। इसका विरोध इतना अधिक था कि एक अवसर पर तो उनका जीवन ही खतरे में था। वे अपने शत्रुओं के हमले से कभी नहीं घबराये। उनके पूर्ण और निरन्तर समर्थन का ही प्रभाव था। जिसके कारण लॉर्ड विलियम बैंटिक 1829 में सती प्रथा को बन्द कराने में समर्थ हो सके। जब कट्टर लोगों ने इंग्लैंड में 'प्रिवी कॉउन्सिल' में प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। तब उन्होंने भी अपने प्रगतिशील मित्रों और साथी कार्यकर्ताओं की ओर से ब्रिटिश संसद के सम्मुख अपना विरोधी प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। उन्हें प्रसन्नता हुई। जब 'प्रिवी कॉउन्सिल' ने 'सती प्रथा' के समर्थकों के प्रार्थना पत्र को अस्वीकृत कर दिया। सती प्रथा के मिटने से राजा राममोहन राय संसार के मानवतावादी सुधारकों की सर्वप्रथम पंक्ति में आ गये।

1831 से 1834 तक अपने इंग्लैंड प्रवास काल में राममोहन जी ने ब्रिटिश भारत की प्रशासनिक पद्धति में सुधार के

लिए आन्दोलन किया। ब्रिटिश संसद के द्वारा भारतीय मामलों पर परामर्श लिए जाने वाले वे प्रथम भारतीय थे। हाउस ऑफ कॉमन्स की प्रवर समिति के समक्ष अपना साक्ष्य देते हुए उन्होंने भारतीय प्रशासन की प्राय: सभी शाखाओं के सम्बंध में अपने सुझाव दिया। राममोहन जी के राजनीतिक विचार बेकन, ह्यूम, बैंथम, ब्लैकस्टोन और मॉन्टेस्क्यू जैसे यूरोपीय दार्शनिकों से प्रभावित थे। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय विवादों के शान्तिपूर्वक निबटारे के सम्बन्ध में कांग्रेस के माध्यम से सुझाव प्रस्तुत किया। जिसमें सम्बंधित देशों की संसदों से सदस्य लिए जाने का निश्चय हुआ।

27 सितम्बर, 1833 में इंग्लैंड में राजा राममोहन राय की मृत्यु हो गई। ब्रिटेन में भव्य समाधि ब्रिटेन के ब्रिस्टल नगर के आरनोस वेल कब्रिस्तान में राजा राममोहन राय की समाधि है। 27 सितंबर, 2018 को उनकी 185वीं पुण्यतिथि थी। बहुत ही कम लोगों को ज्ञात होगा कि यात्रा के मध्य मेनिनजाईटिस हो जाने के कारण यहां ब्रिटेन में ही उनका अप्रत्याशित निधन हो गया था। उस युग में ब्रिटेन में दाह-संस्कार की अनुमति नहीं थी। अत: उनके शव को भूमि में यों ही समाहित कर दिया गया था। वह समाधि तब से धूल-धूसरित, टूटी-फूटी, अज्ञात, उपेक्षित व बुरे हाल में पड़ी थी। एक भारती पारसी से विवाह करने वाली अंग्रेज महिला 'कार्ला कॉन्ट्रैक्टर' ने इसके जीर्णोद्धार का बीड़ा उठाया। कोलकाता के एक व्यवसायी व तत्कालीन मेयर के सहयोग से 10 वर्ष पूर्व ही उन्होंने इसका पुनरुद्धार करवाया और इसे एक भव्य समाधि का रूप दिया। कार्ला के प्रयासों से ही हाथी दांत से बनी राजा की एक दुर्लभ मूर्ति को भी समाधि-भवन में संजों कर रखा गया है। 27 सितंबर, 2013 को ब्रिस्टल में राजा राममोहन राय की उसी समाधि पर श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गई।

राममोहन राय को नये युग का अग्रदूत ठीक ही कहा गया है।

मोनियर विलियम के अनुसार- राजा महोदय सम्भवतः तुलनात्मक धर्मशास्त्र के प्रथम सच्चे अन्वेषक थे।

सील के अनुसार- राजा विश्व मानवता के विचार के संदेशवाहक थे। वे मानवतावादी, पवित्र तथा सरल थे। वे विश्व इतिहास में विश्व मानवता के दिग्दर्शन करते थे।

मिस कोलेट के कथनानुसार- इतिहास में राममोहन राय ऐसे जीवित पुल के समान हैं। जिस पर भारत अपने अपरिमित भूतकाल से अपने अपरिमित भविष्य की ओर चलता है। वे एक ऐसे वृत खंड थे। जो प्राचीन जातिवाद तथा अर्वाचीन मानवता, अंधविश्वास तथा विज्ञान, अनियन्त्रित सत्ता तथा प्रजातंत्र, स्थिर रिवाज तथा अनुदार प्रगति, भयावने अनेक देवताओं में विश्वास तथा पवित्र, यद्यपि अस्पष्ट आस्तिकता के बीच की खाई को ढके हुए थे।

नन्दलाल चटर्जी के अनुसार- राजा राममोहन राय अविनष्ट भूतकाल और उदित होते हुए भविष्य, स्थिर अनुदारता तथा क्रांतिकारी सुधारक अंध परम्परागत पृथकता तथा प्रगतिशील एकता के मध्य मानव सम्बंध स्थापित करने वाले थे। संक्षेप में वे प्रतिक्रिया तथा प्रगति के मध्य बिंदु थे।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार- राममोहन राय ने भारत में आधुनिक युग का सूत्रपात किया। उन्हें भारतीय पुनर्जागरण का पिता तथा भारतीय राष्ट्रवाद का प्रवर्तक भी कहा जाता है। उनके धार्मिक और सामाजिक सब विचारों के पीछे अपने देशवासियों की राजनीतिक उन्नति करने की भावना मौजूद रहती थी। वे आगे लिखते हैं कि मुझे यह खेदपूर्वक कहना पड़ता है कि हिन्दुओं की वर्तमान पद्धति उनके राजनीतिक हितों की दृष्टि से ठीक नहीं है। जात-पात के भाव ने उन्हें राजनीतिक भावना में शून्य कर दिया है। सैकड़ों हजारों धार्मिक कृत्यों और शुद्धता के नियमों ने उन्हें कोई भी कठिन काम करने के अयोग्य बना दिया है। मैं समझता हूं कि यह आवश्यक है कि उनके राजनीतिक लाभ और सामाजिक सुविधा के लिए उनके धर्म में कुछ परिवर्तन हो।

राजा राममोहन राय स्वतंत्रता चाहते थे। वो चाहते थे कि इस देश के नागरिक भी उसकी कीमत पहचानें।

स्मरणीय है कि ब्रिस्टल नगर में एक प्रमुख स्थान पर चमकीले काले पत्थर से बनी राजा राममोहन राय की लगभग दो मंजिला ऊंचाई की एक प्रतिमा भी स्थापित है, जिसमें में वे पुस्तकें हाथ में पकड़े खड़े हैं।

राजा राममोहन राय की मृत्यु के बाद ब्रह्म समाज धीरे-धीरे कई शाखाओं में बंट गया। महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर ने 'आदि ब्रह्म समाज', श्री केशव चन्द्रसेन ने 'भारतीय ब्रह्मसमाज' की और उनके पश्चात् 'साधारण ब्रह्म समाज', की स्थापना हुई। ब्रह्म समाज के विचारों के समान ही डॉ. आत्माराम पाण्डुरंग ने 1867 में महाराष्ट्र में 'प्रार्थना समाज' की स्थापना की जिसे आर.जी.भण्डारकर और महादेव गोविन्द रानाडे जैसे व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त हुआ। इस प्रकार ब्रह्म समाज यद्यपि विभिन्न शाखाओं में विभक्त हो गया। परन्तु उसका मूल आधार एक ही था। सभी का उद्देश्य हिन्दू समाज और हिन्दू धर्म का सुधार करना था। और सभी ने ईसाई धर्म और पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होते हुए भी हिन्दू धार्मिक ग्रंथों, मुख्यतया वेदों को ही अपना मुख्य आधार बनाया था।

यात्रा ने जोड़ दिया अनमोल रिश्ता

खड़क खड़क ...डिदक डिदक.. छक छक छूक छक..करती ट्रेन पहाड़ों, पेड़-पौधों को पीछे छोड़ती दनादन दौड़ लगा रही थी। जैसे-जैसे ट्रेन की गति तेज होती जाती, मेरे सपनों की उड़ान भी उतनी ही तेज गति से बढ़ जाती। आज बरसों बाद मां के पास जाने का मौका जो मिला था। पहले जब भी हम दिल्ली मां के पास गए ,फ्लाइट से ही गए। ट्रेन से जाने का मौका ही न मिला। आज जब बरसों बाद ट्रेन से जाने का मौका मिला तो फूली नहीं समा रही थी। ट्रेन का सफर मुझे बहुत रोमांचित करता है। फिर जब परिवार भी साथ हो तो कहना ही क्या। मुंबई से दिल्ली लगभग चौबीस घंटों का सफर मुझे बहुत रोमांचित कर रहा था। पतिदेव को कम्पनी के काम से दिल्ली जाना था, संयोग से बेटे चिंटू की दीवाली की छुट्टियां भी थीं। ऐसे मौके कम ही मिल पाते थे। एक तो ट्रेन का सफर, दूसरा मां के घर दीवाली मनाना किसी खुशनुमा सपने जैसा लग रहा था।

राज ने अपने साथ हमारी टिकट भी बुक करवा ली थी। भैय्या-भाभी को आने की सूचना दे दी गई।

मुंबई बांद्रा से ये ट्रेन लगभग आठ बजे चल कर अगले दिन दिल्ली पहुंचती है। सुबह से मैं तैयारी में व्यस्त थी। साड़ियां निकाल-निकाल कर देखती रही, कौन सी रखूं कौन सी छोड़ूं। मारे खुशी के फूली-फूली फिर रही थी। खाने में पूरी सब्जी, अचार पापड़ सब पैक कर लिया था। शाम के पांच बजे होंगे, रात का खाना पैक कर हम समय से पहले ही बांद्रा स्टेशन पहुंच गए थे। बादलों की लुका-छिपी में, ऊँघती पत्तियों के झुरमुठ से अपनी छठा बिखेरता सूरज छिपने को था। त्योहार की छुट्टियों के कारण ट्रेन खचाखच भरी थी। राज के एक सहकर्मी भी हमारे

कमलेश शर्मा
मानसरोवर, जयपुर

साथ थे। जिन्हें स्लीपर नहीं मिल पा रहा था। हमने उन्हें आश्वासन दिया, हमारे पास चिंटू के लिए अलग स्लीपर है, वह उसके पास सो जाएँगे।

सामने की सीटों पर एक मुस्लिम परिवार अपना सामान सीटों पर फैलाए बैठा था। हमने जब उनसे सामान सीट के नीचे रखने को कहा तो वे नाराज हो कर बोले, 'जनाब, ये हमारी सीट है। हम जैसा चाहे इसका इस्तेमाल कर सकते हैं। हमने चुप रहने में ही भलाई समझी। इस परिवार के साथ एक बच्चा भी था जो हमारे चिंटू की उम्र का ही होगा। अपने हम उम्र साथी को देख दोनों मुस्कुरा रहे थे। दोनों ने आपस में कुछ इशारा किया और ऊपर की सीटों पर जा बैठे।

'क्या नाम है तुम्हारा?' चिंटू! और तुम्हारा? 'जमाल'! अंताक्षरी खेलोगे?

हाँ। और थोड़ी ही देर में में ही बच्चे आपस में ऐसे घुल-मिल गए जैसे बरसों से एक-दूसरे को जानते हों। एक तरफ जमाल के माता-पिता की बेरुखी, दूसरी तरफ बच्चों का मुल्क और मजहब से परे दोस्ती का पाक रिश्ता सांसों में खुशनुमा जिन्दगी की मिठास घोल रहा था। देखते ही देखते ट्रेन में बैठे और लोग भी उनके खेल में शामिल होते गए। गानों ओर ठहाकों से पिकनिक सा एहसास हो रहा था। बच्चों को देख हम दोनों परिवार भी तनाव को भुला बातों में मशगूल हो गए।

ट्रेन दौड़े जा रही थी, स्टेशन दर स्टेशन बीत रहा था। हर स्टेशन पर गाड़ी रुकते ही छोटे छोटे बच्चे, स्टेशन से पानी भर कर देने के लिए आवाजें लगा रहे थे। मैं खिड़की से बाहर देख रही थी। पानी भरने के बदले लोग जब इन्हें पांच दस रुपए दे देते, तो इनके चेहरे खुशी से खिल उठते। ऐसा करना इनकी मजबूरी ही थी। मुझे एक बात की खुशी हो रही थी कि भले ही इनकी उम्र काम करने की नहीं, लेकिन ये बच्चे भीख मांगने के बजाय मेहनत कर रहे हैं। वर्ना गरीबी तो मांगने पर भी मजबूर कर देती है। गाड़ी अपने गंतव्य की ओर भाग रही थी।

सुहाना मौसम, हरे-भरे खेत, गाड़ी के साथ साथ दौड़ते खेत, नदियां, पहाड़, धान धन की रोपनी करते मजदूर। तभी खेतों में बड़े-बड़े मोर दिखाई दिए तो बच्चे चिल्ला उठे, देखो मोर, एक वो रहा। जमाल, देखो एक मोर पंख फैला नाच रहा है। बच्चे खेल छोड़ बाहर का मनमोहक नजारा देखने लगे। आठ बज चुके थे। लोग घर से लाए खाना खाने में व्यस्त थे। पूरी सब्जी, नमकीन, अचार, खजूरिया, लिट्टी और ना जाने क्या-क्या।

पूरा डिब्बा महक रहा था। जमाल ने भी अपनी अम्मी से खाना मांगा तो चिंटू को भी भूख लग आई। हम भी अपना खाना निकाल खाने बैठ गए। हंसी खुशी समय बीत रहा था। जमाल व चिंटू अपना अपना खाना ले फिर ऊपर जा बैठे।

मैंने देखा दोनों अपना-अपना खाना

आपस में बांट कर खा रहे थे, मैंने इशारा कर अपना अपना खाना खाने को कहा तो जमाल की अम्मी बोली, बहन, बच्चों की कोई जात नहीं होती, खाने दो, मेरा बेटा भी तो आपका खाना खा रहा है। माहौल खुशनुमा था, लग ही नहीं रहा था कि हम सफर कर रहे हैं, ऐसा लग रहा था जैसे कोई पिकनिक मनाने जा रहे हैं।

हर स्टेशन पर ट्रेन रुकते ही 'चाय-चाय' की आवाजें, नलों से पानी भरते लोग, पत्र-पत्रिकाओं के लिए आवाजें लगाते दुकानदार रोमांच पैदा कर रहे थे। बाहर का जीवंत दृश्य बहुत मन मोहक था।

खाना खाने के पश्चात् हम सोने की तैयारी में थे। राज सोच रहे थे, अगर जमाल ओर चिंटू एक सीट पर सो जायें तो एक सीट अविनाश को दे दी जाए। उसे अभी तक स्लीपर नहीं मिल पाया था। दोनों बच्चे साथ सोने की जिद भी कर रहे थे। मगर जमाल के पिता इस बात के लिए राजी नहीं हुए। मैं सोच रही थी, अगर इनकी जगह कोई अपने धर्म, मजहब या मुल्क का होता तो ऐसे रूखेपन से पेश ना आता। मगर मैं गलत थी। राज ने मुझे समझाया, वे गलत नहीं हैं। आराम से यात्रा करना उनका हक है। थोड़ी देर हम दोनों परिवारों में सन्नाटा छाया रहा। वक्त की नजाकत देख मैंने चिंटू को अपने पास सुला लिया। लग रहा था जैसे भारत पाकिस्तान के तनाव के बादल यहां भी छा गए हों। हालांकि जमाल और चिंटू अब भी एक दूसरे को देख कुछ कहना चाह रहे थे, मगर अपने-अपने माता पिता के डर से चुप थे।

हम शान्ति से नींद लेते हुए, सुरक्षित यात्रा की चाह में चुपचाप लेते थे। सामान की सुरक्षा की चिंता भी थी। सुरक्षा एक ऐसा शब्द है,जिस पर यात्रा करते हुए व्यक्ति खास तौर पर ध्यान देता है। सुरक्षा चाहे जिन्दगी की हो या सामान की, उन्माद का शिकार तो होता ही है। नींद आने का नाम नहीं ले रही थी।

सुबह होने को थी। सर्द रात होने के कारण बाहर अँधेरा था। राज चाय की चाहत में गेट के पास खड़े थे। ट्रेन ने फिर गति पकड़ ली थी। मंजिल भी नजदीक थी। अचानक एक तेज धमाके के साथ जोरदार झटका लगा। किसी को भूकम्प का अहसास हुआ, तो किसी को भयानक दुर्घटना घटती लगी। अपने आप को संयत कर इधर-उधर देखा तो रूह काँप उठी। बंद डिब्बे में अंधेरे को कोंधती चीखें, इधर-उधर भागते लोग, कहीं किसी के चप्पल जूते, तो कहीं बिखरा सामान। इसके बाद न जाने मुझे क्या हुआ, होश आया तो अपने आप को अस्पताल में पाया। हालाँकि मुझे गहरी चोट नहीं आई थी, मगर बदहवासी में अपना होश खो बैठी थी। हमारी ट्रेन दिल्ली पहुँचने से पहले ही दुर्घटना ग्रस्त हो चुकी थी। जिसमें पता चला कि काफी लोग जख्मी हुए थे। मुझे अपने परिवार के साथ-साथ सहयात्रियों की चिंता भी खाए जा रही थी।

चिंटू बिल्कुल ठीक था, दुर्घटना क्योंकि दिल्ली पहुँच कर ही हुई, सो सुन कर मेरे भैया दौड़े चले आए थे। राज भी अस्पताल में थे, उन्हें काफी चोटें आई थी। पल भर में सब कुछ बदल चुका था। सारे सपने, सारी योजनाएं, धरी की धरी रह गईं। परिस्थितियां ही कुछ ऐसी बनीं कि सब धरा का धरा रह गया। दोस्त यार, रिश्तेदार, सहकर्मी अस्पताल पहुँचने लगे थे। राज के पैर में फ्रेक्चर था। आज राज का ऑपरेशन था। बाहर बैठी, ईश्वर से प्रार्थना कर रही थी कि नजर सामने लगे टी.वी.पर पड़ी। मरीजों के स्वास्थ सम्बन्धी सूचनाएँ आ रही थी।

अचानक एक सूचना ने मेरा ध्यान खींचा। 'आवश्यकता है, 'ओ' नेगटिव खून की, दानदाता शीघ्र इस नम्बर पर सम्पर्क करें। नीचे मरीज के परिजनों के नम्बर थे। मैंने झट से पर्स से डायरी निकाल नम्बर नोट कर लिए। मुझे याद आया ये नम्बर तो जमाल चिंटू को दे रहा था और फोन करने को कह रहा था। कहीं जमाल तो....?

मैंने भैया को बताया, 'मेरा ब्लड ग्रुप 'ओ' नेगटिव ही है। मुझे मदद को जाना होगा।'

पर राज का ऑपरेशन भी तो है। 'नहीं मैं नहीं जा पाऊँगी' पर उसे कुछ हो गया तो? अपने आप को माफ कर पाऊँगी? मुझे जाना ही होगा।

अजीब दुविधा थी, एक तरफ पत्नी का फर्ज, दूसरी तरफ इंसानियत का। क्या करूँ? भैया ने आश्वासन दिया, 'राज के पास मैं हूँ ना?'

चंद मिनटो में मैं ब्लड डोनेशन कक्ष में थी।

मैंने मरीज से मिलना चाहा। एक सज्जन मुझे मरीज तक ले गए। मरीज को देख मेरे पैरों तले जमीन खिसक गई।

'जमाल'?

इस हालत में? सामने जमाल के पिता हाथ जोड़े खड़े थे। माँ की आँखों से झर-झर आँसू बह रहे थे। डॉक्टर ने आश्वासन दिया, 'अब मरीज को कोई खतरा नहीं। ब्लड मिल चुका है।'

दु:ख के बादल छँट चुके थे। उधर राज का ऑपरेशन भी कामयाब रहा।

कुछ समय जरूर लगा, मगर दुखद घटना सुखद अंत की ओर जा रही थी।

वास्तविक रूप से मैं आज तक इस यात्रा को भुला नहीं पाई। परिस्थितियाँ ही कुछ ऐसी बनी की हादसे ने सबकुछ बदल कर रख दिया।

ये यात्रा कभी भुलाए नहीं भूलती। अच्छी बात ये रही की इस यात्रा ने हमें एक ऐसा मित्र दिया, जो आज भी हमें अपने परिवार की तरह लगता है।

जमाल के फोन अब भी आते हैं, वह अक्सर कह उठता है, 'आंटी, मेरा आपका तो खून का रिश्ता है ना? आँखें खुद ब खुद नम हो जाती हैं। पूरी यात्रा चल चित्र की भाँति आँखों के सामने आ जाती है।

'दुखद घटना का सुखद अंत।'

शैली श्रीवास्तव
मोटीवेशनल स्पीकर

मोनोफोबिया
अकेले होने का डर

मोनोफोबिया : अकेले होने के डर के दुष्प्रभाव

डर की सैकड़ों किस्में होती हैं और उनमें से एक ऐसा डर होता है जो अधिकतर हम सभी में पाया जाता है- अकेले होने का डर! किसी में कम तो किसी में हद से ज्यादा! डरना बुरा नहीं है और न ही ये कोई शर्मिंदा होने की जायज वजह है बल्कि ये डर ही है जो हमें स्वयं से लड़ने की चुनौती देता है और हमसे हारकर हमें निडर बनाता है। भविष्य का डर हमें वर्तमान को सुनियोजित ढंग से जीने के योग्य बनाता है। समाज का डर हमें अपनी पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करने को लगातार उकसाता है। ईश्वर से डर हमें बुरे कर्म न करने और अमूल्य मानवीय भावों जैसे करुणा, दया, सहानुभूति आदि को हमारे अंदर बनाये रखने में सहायक होता है। अपयश या बदनामी का डर एक इंसान को जानवर न बनने अपितु इंसान बनने पर मजबूर करता है।

अब आप सोच रहे होंगे कि फिर अकेले होने का डर क्या बुरा है? ये भी तो इंसान को सदा अपने और अपने आस-पास के लोगों से सामंजस्य बैठाकर समाज-परिवार को बनाये रखने में मदद करता है। यकीनन, करता है।

पर जब ये डर किसी मासूम बच्चे के दिल में बचपन से बैठ जाता है तो वो बड़ा ही नहीं हो पाता। एक वयस्क का अर्थ है- एक ऐसा व्यक्ति जो अन्य लोगों को अपने निर्भीक व्यक्तित्व से डर से मुक्ति दिलाने में मदद करता है न कि खुद अकेले होने या कुछ भी करने से डरता है और सदा दूसरों का सान्निध्य पाने की सफल-असफल कोशिशें करता रहता है। किसी को साथ लेके चलना या उसके साथ रहना अच्छा है। बहुत अच्छा है! मगर अकेले अपने खुद के साथ न रह पाना बुरा है, बहुत ही बुरा!

बाल्यावस्था में

एक बच्चा जो इसका शिकार होता है हमेशा अपने मां-बाप की अंगुली पकड़े रहता है-बड़ा हो जाने तक। बचपन में रात को अकेले सू-सू करने नहीं जाता और बड़ा होकर भविष्य संवारने हेतु हॉस्टल जाने से साफ इंकार कर देता है और माता-पिता की आशा पे पानी फिर जाता है।

किशोरावस्था में

एक किशोर जो घर पर अकेला रहता है क्योंकि उसके माता-पिता कमजोर घरेलू आर्थिक स्थिति के कारण बाहर काम करने को विवश हैं-वो चूँकि अकेला रह नहीं पाता पर उसे रहना पड़ता है इसलिये वो भयानक चिड़चिड़ेपन, जिद्दीपन, क्रोधी स्वभाव और दुर्व्यसनों जैसे खूब टी. वी. देखना, वीडियो गेम खेलना, अनियंत्रित खान-पान आदि का शिकार हो जाता है।

युवावस्था में

अब बात करें सबसे खूबसूरत मानवीय जीवन की अवस्था अर्थात् युवावस्था की तो आज का युवा कदापि अकेला रह ही नहीं सकता। टेक्नोलोजी का साथ चाहे लैप-टॉप के रूप में हो या स्मार्टफोन के रूप में या कोई और आधुनिक गैजेट्स, उसे हर हाल में चाहिये होते हैं।

परिवार में प्रत्यक्ष होकर भी अप्रत्यक्ष रहने वाले आज-कल के अधिकतर युवा सोशल नेटवर्किंग साइट पर क्या ढूँढ़ते फिर रहे हैं... जिन रिश्तों को खो दिया उनको या जिन रिश्तों को बचा नहीं पाये उनका एक और विकल्प! पर, जब इन निर्जीव नाते-रिश्तों को जीना शुरू कर देते हैं तो और भी अकेले हो जाते हैं- बहुत अकेले! फिर शिकार हो जाते हैं अवसाद यानि की डिप्रेशन का। प्रेम, अकेलेपन को दूर भगाने का एक बेहद सरल परन्तु अत्यंत सशक्त माध्यम है। पर, विषमता ये है कि प्रेम उस व्यक्ति मात्र की उपस्थिति या अनुपस्थिति पर ही टिका होता है- परिणामस्वरूप ये अकेले होते ही टूट जाते हैं। जैसा कि आज-कल कई अखबारों में सुर्खियाँ होती हैं कि अमुक ने अमुक के वियोग में जान दे दी और कईयों ने एक-दूसरे की जान तक ले ली या उनका जीवन नर्क से भी बदतर बना दिया!

वृद्धावस्था में

अकेले हो जाने का सबसे ज्यादा डर वृद्धावस्था में होता है-ये डर न जाने कितने ही वृद्ध और वृद्धाओं को अपने नाकारा बच्चों के साथ हर हाल में रहने पर मजबूर कर देता है क्योंकि हर वृद्धाश्रम भी हर एक के लिए नहीं होता।

अनेक किस्से-कहानियों में तो जबरन साथ रहने वालों को कहीं घरेलू

हिंसा का शिकार होना पड़ता है तो कहीं मृत्यु का। कहीं पर अपमान के कड़े घूंट पीने पड़ते हैं तो कहीं पर जहर के!

आखिर क्यों नहीं रह पाते अकेले तब, जबकि आप आये अकेले हैं और आपको जाना भी अकेले ही है!

तो जब भी आप अकेले हों ...

आत्म-निंदा करना बंद कर दीजिये।

याद रखिये, गीता में भी भगवान कृष्ण ने कहा है....

'निज से करे उद्धार निज,
निज को न गिरने दे कभी।
नर आप ही है शत्रु अपना और
आप ही है मित्र भी।।'

आपके दुर्गुणों की चर्चा करने को और भी बहुत लोग हैं - कम से कम आप तो अपने-आप को बख्शिये!

अपनी सर्वोत्तम उपलब्धियों को याद करिये

आप के माता-पिता अगर जीवित हैं तो उनका आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन, परिवार का सुख, स्वस्थ शरीर, वफादार दोस्त, चंद मधुर यादें और सुनहरा भविष्य - ये वो उपलब्धियां हैं जो बहुत से लोगों को हासिल ही नहीं होतीं। एक अस्वस्थ दिमाग वाले व्यक्ति के पास मधुर यादें कहां? एक अनाथ के पास माता-पिता का सुख कहां? एक किन्नर को परिवार का सुख कहां? एक निहायत ही गरीब इंसान को मित्रों का सुख कहां? और, एक मृत्यु-शैय्या पर लेटे व्यक्ति को भविष्य का सुख कहां?

तो, अपने सुनहरों पलों को अपनी आँखें बंद करके जी जाइये और मंद-मंद मुस्कुराइये साथ ही अपनी बेशकीमती नियामतों के लिए ईश्वर का शुक्रिया अदा करना मत भूलिये।

**पुराने फोटोज के एल्बम निकालिये* देखिये, ये आप ही तो हैं जो इतना सफर तय कर चुके हैं और वाकई बड़े हो चुके हैं।

**एक डार्क चॉकलेट खुद को गिफ्ट में खरीद कर दीजिये और उसे खाकर अपने मनपसंद गाने पर धीमे-धीमे लहराइये।*

जनाब, अगर जिंदगी नाचने में राजी होती है तो नाचने में कहां बुराई है?

**यादों की धूल साफ करने की जगह अपनी किताबों और घर की धूल झाड़िये।*

खूब शारीरिक श्रम कीजिये ताकि खूब थक जायें और फिर एक बढ़िया सा स्नान करिये। एक भीना-भीना सा डियो या पाउडर लगाइये। आइने में खुद को देखकर हंसिये क्योंकि, कभी ऐसा भी होगा कि आप, आप ही के आइने में नज़र ही नहीं आयेंगे - न ही अपने-आपको और न ही किसी और को।

**घर की खिड़कियों को पूरा खोल दीजिये और छन-छनकर आती धूप का, अड़ियल धूल का, नि:स्तब्ध नीले आकाश का, कबूतरों की गुटरगूँ का, सड़क पर इतराती-शोर मचाती मोटरसाइकिलों-गाड़ियों का पूरा मजा लीजिये।*

**एक अदद दीपक या चंदन की अगरबत्ती जलाइये और एक बच्चे की तरह अपने ईश्वर की तरफ देखिये वो नि:संदेह आपको, आपकी तरफ देखते हुए मिलेगा। आप माने या न माने पर आप अकेले होते ही नहीं हैं क्योंकि विधाता कण-कण में विराजमान है । वो एक सतर्क परीक्षक है जो हमेशा हमारे साथ रहता है-हमें जांचने के लिये।*

**एक डायरी उठाकर कुछ भी आपकी पसंद का लिख डालिये।*

अपने जज़्बातों को, उमड़ते- घुमड़ते दिल के अरमानों को, देखिये क्या होता है? अकेलापन भूल जायेंगे!

**आपको सोने की इच्छा हो तो चादर बदल डालिये और पूरे पैर फैलाकर या छोटे बच्चों की तरह गुड़-मुड़ होकर सो जाइये। हाँ, रोशनी कम हो ताकि निंदिया रानी आराम से आ सके और आपको अपने आगोश में सुला सके।*

**और कुछ भी असर न करे तो अकेले सीमा पर तैनात फौजियों को याद करिये! अकेले घुटते-रोशनी को तरसते कैदियों को याद करिये! हिमालय की गोद में सब-कुछ त्यागकर तप करते योगियों को याद करिये!*

याद कीजिये जब आप अपनी मां के गर्भ में थे - क्या बिल्कुल अकेले थे! नहीं जनाब! तो वहां कौन था आपके साथ? आप खुद ही तो थे!

याद रखिये आप अपनी चिता पर या कब्र में भी अकेले नहीं होंगे! वहां भी आप ही अपने खुद के साथ होंगे! तो, अपने स्वयं के साथ जीवन में जीना सीखिये और स्वयं के साथ हँसते-हँसते विदा लेना भी! देखिये कितना आनंद मिलता है!

और जब ईश्वर खुद आपके हृदय में निवास करते हैं तो आप कहाँ अकेले हैं?

मोनोफोबिया : अकेले होने के डर से कैसे छुटकारा पायें?

सर्वप्रथम अपने आप को पसंद करना सीखिये।

क्या आप वाकई अपने-आप को पसंद करते हैं? कहीं ऐसा तो नहीं कि आप अकेले होते ही, खुद को ही खुद की अदालत में स्वयं का गुनहगार साबित करने पर तुल जाते हैं? या फिर ऐसा होता हो कि अकेले होते ही आप अपनी और अपने अतीत की कब्र खोदना शुरू कर देते हैं ?

सोचिये? अगर आप अपने-आप को ही पसंद नहीं करेंगे तो आपके सुनहरे सपने, मखमली भविष्य और आपके करीबी लोग आपको क्यों पसंद करेंगे?

क्योंकि, एक बालक या किशोर को तो आप बचा सकते हैं। मगर, आपको- चाहे आप युवा हैं या प्रौढ़ या कोई वृद्ध, अगर अकेलेपन के शिकार हैं तो आपको कौन बचायेगा?

प्लाजो से पाएं समर सीजन में स्टाइलिश लुक

अदिति

प्लाजो पैंट्स में इतनी वैरायटी है कि इसे फॉर्मल और कैजुअल दोनों तरह से स्टाइल किया जा सकता है।

ढीला प्लाजो

ढीला प्लाजो इन दिनों मेट्रो शहरों से लेकर छोटे शहरों तक की लड़कियों की पहली पसंद बना हुआ है। प्लाजो किसी भी पोशाक के साथ पहनने के लिए बेहद फैशनेबल और शानदार है। लाइट फैब्रिक से बनी प्लाजो पैंट कमर से एड़ी तक खूब घेरदार होती है और लंबाई के साथ इसका घेर बढ़ता जाता है। प्लाजो पैंट्स हर फैब्रिक, हर प्रिंट में उपलब्ध है। इसमें प्रिंट ऑन प्रिंट, प्लेन कलर, पोल्का डॉट, ट्राईबल प्रिंट, फ्लोरल प्रिंट, जियोमेट्रिकल प्रिंट ज्यादा चलन में है। प्लाजो पैंट्स इतनी हल्की और हवादार होते हैं जिससे पैर और त्वचा टैन होने से बच जाती है। *जानिए प्लाजो के कुछ ऐसे स्टाइल के बारे में जिससे आप अपनी पसंद के अनुसार अपने आउटफिट को और भी ग्लैमरस लुक दे सकती है।*

कॉलेज लुक के लिए

कॉलेज गोइंग गर्ल्स के लिए रैप प्लाजो श्रेष्ठ ऑप्शन है। कॉलेज के लुक के लिए आप इसे कैजुअल टॉप या टी-शर्ट के साथ ट्राई कर सकती हैं। यह पहनने में टाइम लेस होने के साथ घंटों आपको स्टाइलिश लुक देता है।

फैब्रिक पर भी दे ध्यान

प्लाजो खरीदते समय ध्यान रखें कि इसका फैब्रिक लाइट और सॉफ्ट हो। जैसे-लिनन, जर्सी, क्रेप, शिफॉन, कॉटन, आदि। ऑफिस में शिफॉन फैब्रिक से बचे। ये पैरों में मौसम के बदलाव के साथ चिपक सकता है।

पार्टी, फंक्शन के लिए

प्लीटेड, फ्लेयर्ड या प्लाजो सूट ऐसी ड्रेस है जिसे आप शादी - पार्टी में काफी आसानी से पहन सकती है। प्लाजो के साथ आप मैचिंग कुर्ती और दुपट्टा डाल सकती हैं। साथ ही ज्वेलरी अच्छे तरीके से बैलेंस करते हुए पहने। ध्यान देने वाली बात है कि कुर्ती ज्यादा काम की हो तो प्लाजो कम काम का रखते हुए अपने लुक को बैलेंस करें। वहीं लो-वेस्ट प्लाजो के साथ स्ट्रेट कट कुर्ती या ट्यूनिक भी पहन सकती है। इससे आपका लुक एक तरह बना रहेगा।

प्रोफेशनल लुक के लिए

ट्राउजर प्लाजो, स्ट्रेट प्लाजो ऑफिस के लिए भी बेस्ट ऑप्शन है। ब्लैक, ग्रे, ब्लू, ब्राउन रंग का चयन कर इन ऑफिस में भी पहना जा सकता है। लाइनिंग शर्ट के शिफॉन ब्लाउज के साथ प्लाजो को डाल सकती हैं। साथ ही ऑफिशल ज्वेलरी इसे प्रोफेशनल लुक देती है। पेस्टल शेड्स या प्लेन प्लाजो का चयन करें।

आउटिंग, शॉपिंग के लिए

डिजाइनर्स का मानना है कि प्लाजो बनाया ही इसलिए गया है ताकि लड़कियां इसे पहन कर आराम से घूम सके। मूवी, पिकनिक, शॉपिंग के लिए आप इसे पहन सकती हैं। प्रिंटेड, हाई-वेस्ट, साइड स्लिट, क्रॉप्ड प्लाजो का कॉम्बिनेशन शियर टॉप, कॉटन टॉप, क्रॉप टॉप या डार्क रंग के साथ किया जा सकता है। इसके साथ स्कार्फ डाल सकती हैं।

शेष पृष्ठ 21 पर

साक्षरता

किसी समय की बात है, भारत के आसाम प्रांत के एक छोटे से गाँव में एक परिवार रहता था। पति-पत्नी और छह बच्चे, पति जो पेशे से चाय की खेती करता था, बागवानी करके परिवार का भरण-पोषण कर रहा था। पत्नी का कार्य पति को सुबह नाश्ता-टिफिन देकर विदा करना और फिर पूरा समय घर के कामकाज में बिता देना था और फिर सूर्यास्त होते-होते पति की राह देखना होता था। बच्चे जिनमें चार बेटे थे और दो बेटियां, बेटे चारों ही बड़े थे। दोनों बेटियां छोटी थी।

बड़ी बेटी नीमा, छोटी नीना थी। छोटी बेटी की उम्र नौ साल थी क्योंकि मां-बाप की सोच में विद्यालय भेजने जैसा दिमाग में कोई कीड़ा ही ना था। अत: भाई- बहन सभी अनपढ़ थे, छोटी बेटी नीना स्वभाव से शांत थी और अक्सर ही किसी न किसी कल्पना की दुनिया में अपने सपनों को बुना करती थी। एक वर्ष बीता, नीना ने पाठशाला जाते छोटे-छोटे बच्चों को देखा, उसने अपनी माँ से विद्यालय जाने की जिद्द की।

पहले तो मां-पिता ने विद्यालय भेजने में आनाकानी की, किंतु फिर वह तैयार हो गए। नीना की खुशी का ठिकाना ना था। उसने अपने पिता के साथ जाकर विद्यालय में दाखिला लिया और बड़े ही उमंगों से अपना स्कूल ड्रेस और बस्ता तैयार किया। वह प्रतिदिन स्कूल जाती थी और एक भी अनुपस्थिति लगाने के विचार में ना थी। समय बीता। अब वह कक्षा की प्रतिभावान विद्यार्थियों में गिनी जाने लगी और शिक्षक उसकी प्रशंसा हर किसी से करने लगे। अब मीना के माता-पिता ने अपने सभी बच्चों को स्कूल में दाखिला दिला दिया था क्योंकि मीना के पिता जो धोखे से मालिक से कम पैसे पाते थे, अब तो नीना अपने जोड़ से बता देती थी कि आपको मालिक से कितने रुपए प्राप्त होंगे। नीना की समझदारी ने माता-पिता की सोच ही बदल दी। नीना जो बचपन से ही प्रकृति से बातें किया करती थी, कल्पना की दुनिया में हुआ करती थी, अब उसको शब्दों के पंख मिल चुके थे। उसने अपनी एक अलग कॉपी बनाई, अपनी कल्पना की। उसे जो भी कल्पना में आता वह शब्दों के माध्यम से उन्हें कॉपी में उकेरती जाती, कभी कोई कहानी बन जाती तो कभी कोई कविता। फिर एक दिन अचानक उसके विद्यालय में 'एक कहानी लिखो' प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जीतने वाले को पांच सौ रूपये का इनाम देने का निर्णय दिया गया। नीना कहानी प्रतियोगिता जीत गई और पांच सौ रुपये इनाम में पाई। अब नीना के माता-पिता, भाई-बहन सभी बहुत खुश थे। परीक्षाएं आई, उसमें नीना व नीना के भाई ने सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त किए। वहां के प्रधानाचार्य ने उन दोनों को छात्रवृत्ति देने की घोषणा की।

अब वह माता-पिता जो पढ़ाई करने कराने की सोच ही न रखते थे। उनके विचारों में अद्भुत परिवर्तन आया अब वह अपने पड़ोसियों, साथियों व रिश्तेदारों को पढ़ाने की बातें करने लगे थे।

'शिक्षित' होने का मतलब ना केवल यह है कि धन दौलत की ही बरसात हो अपितु विचारों से भी धनी होना है।'

वर्तिका अग्रवाल
बनारस

मजदूर

मई माह की तेज गर्मी में शांति कॉलोनी में सड़क पुनर्निर्माण का कार्य चल रहा था। कई मजदूर स्त्री, पुरुष कड़ी धूप में बड़ी मेहनत से इस कार्य को करने में लगे थे। दोपहर में भोजन विश्राम का समय आया तो कुछ पांच, सात मजदूर और उनकी स्त्रियां अपने-अपने भोजन की पोटली और टिफिन लेकर शिवानी के घर के बाहर हरे वृक्ष की सघन छाया में भोजन करने बैठ गए। शिवानी ने अपनी रसोई की खिड़की से देखा उसे लगा उनके पास पीने का पानी नहीं है। उसने फ्रिज में से तीन चार ठंडें पानी की बोतलें निकाली और उन्हें देने पहुंच गई। ठंडा पानी उन्होंने अपने पास रखे खाली बर्तन में ले लिया और एक मजदूर स्त्री में हाथ जोड़कर कृतज्ञता दर्शाई। शिवानी ने अपने घर में प्रवेश किया उसके पति नवीन ने कहा दे आई पानी। पूरी कॉलोनी में सिर्फ तुम ही हो जो धर्म के काम में सबसे आगे रहती हो। शिवानी ने अपने पति नवीन की बात का कोई जवाब नहीं दिया और वह रसोई घर में चली गई नवीन भी वहां आ गया और बोला कितनी बार समझाया कुछ गलत लोग भी इनमें शामिल होते हैं शहर में कई वारदातें हो चुकी हैं... हां मुझे पता है नवीन पर सब गलत नहीं होते। तुम्हें कैसे पता इनमें कोई गलत नहीं है? नवीन ने पूछा। शिवानी बोली ये मजदूर है इतनी तेज धूप में अपनी कठिन कर्म साधना से सडक बना रहे हैं और हमारे राष्ट्र के निर्माण में सहयोग दे रहे हैं। यह कह कर वह खाली बोतलें पानी से भरने लगी। नवीन के पास इसका जवाब नहीं था वह अखबार पढ़ने लगा और मजदूर सड़क निर्माण में व्यस्त हो गए।

वीनू शर्मा
जयपुर

ये हैं मजदूर

ये हैं मजदूर
जी हाँ, यही वो मजदूर हैं
जो बनाता है अमीरों की
कंगूरे वाली अट्टालिकाएँ
और जड़ता है कंगूरे दीवारों पर

जी हाँ, ये ही हैं वो मजदूर
जो हर रोज असमंजस में जीता है
कि कल उसे काम मिलेगा या नहीं
रोटी का जुगाड़ होगा या नहीं

सुबह तड़के खाली पेट
खड़ा रहता है मजदूरों के चौक में
और चौकन्ना हो ढूँढ़ता है
किसी ठेकेदार को

मिलते ही, ठेकेदार को
झपट लेता है उसे और
कर लेता है जुगाड़
आज के निर्वाह का

दूसरों की असंख्य छतों को
भरने वाला, सोता है
बिना छत के फुटपाथ पर
गंदे नाले के ऊपर

उसे चाहिए सिर्फ दो रोटी
जिससे बना सके काया को सक्षम
ईंट, बजरी और सीमेंट के
कट्टे ढोने के लिए

एक मां भी है इनमें
जो कांख में बच्चा और
माथे पर भारी तगारी लिए
चढ़ती-उतरती है सौ बार सीढ़ी से

जी हाँ, यही है मजदूर जो
शाम को इंतजार करता है दिहाड़ी की
जिससे नोन, तेल,
लकड़ी और चून खरीद कर
चुग्गा देगा अपने लाचार परिवार को
जी हाँ, यही है मजदूर।

सुशीला शर्मा
जयपुर

सोच कर बोलते हैं

सुना है के वो मुख़्तसर बोलते हैं
सो हम भी बहुत सोच कर बोलते हैं

दुखाते रहे हैं जो औरों के दिल को
उन्हें लोग अब मोतबर बोलते हैं

है परवाज में ताबो तासीर कितनी
फिजा में परिन्दों के पर बोलते हैं

हुकूमत से मिलते हैं तमगे उन्हीं को
जमाने जिनके हुनर बोलते हैं

मिटा देंगे इस देश पर जिन्दगानी
जवानों के सरहद पे सर बोलते हैं

यहां से जो हम साथ लेकर चलेंगे
उसी को तो रख्ते सफर बोलते हैं

मेरी शायरी की ये उर्दू जुबां है
मधु इसमें अहले हुनर बोलते हैं।

मधु गुप्ता
नागपुर

लघु कथा

जलना और महकना

दीपक ने एक दिन बड़े ही अहंकार से अगरबत्ती से कहा 'देख जलती तो तू भी है अगरबत्ती और जलता मैं भी हूँ। मेरे जलने पर चारों ओर प्रकाश फैल जाता है पर तेरे जलने से अंधकार दूर नहीं होता। अगरबत्ती ने बड़ी ही शालीनता से कहा 'बात तो तेरी ठीक है दीपक लेकिन तेरे जलने से कालिख निकलती है और मेरे जलने से महक, जो चारों ओर फैल कर वातावरण को सुगंधित बनाती हैं 'जलने से कहीं बेहतर है महकना, सुगंधित होना।

डॉ. पारुल जैन
सहायक प्रोफेसर,
एस.जे. कॉलेज, जयपुर

लिखें क्या जवाब में

ना जाने क्या लिखा है नजर से किताब में
आता नहीं समझ के लिखें क्या जवाब में

मेहबूब मेरा हुस्न कहां अब हिजाब में
खेलें हैं खेल खूब हवा ने नकाब में

नजरों से भर दिये हैं अभी जाम बज़्म में
हर एक रिन्द डूब गया है शराब में

अवराक़ सब उड़ा दिये खुश्बू से पुर थे जो
थे लम्स उँगलियों के हज़ारों गुलाब में

मुझ को तो इंतजार तेरा उम्र भर रहा
तूने हिला दिया था जो सर को जवाब में

शब् को चमक चमक के जो गुम हो गए कहीं
जुगनू कहाँ मिलेंगे वो अब आफताब में

मुद्दत हुई मिले हुए खुद ही से वन्दना
गुम हो गए हैं हम कहीं दुनिया की ताब में।

वंदना मोदी गोयल

विज्ञापन

ओम मानव सेवा समिति रजि. देवी नगर, जयपुर वर्ष 2004 से संचालित की जा रही है और वर्तमान में वर्ष 2012 से जयपुर शहर में सक्रिय है। अभी वर्तमान में इस समिति में 700 सदस्य सक्रिय रूप से अपनी सेवाएं दे रहे हैं। समिति की ओर से संचालित की जा रही मुख्य सेवाएं (दीन भोज सेवा, गो-सेवा, मूक सेवा, जन सेवा) मुख्य हैं।

अगर आप भी समाज सेवा में अपना योगदान देना चाहते हैं तो सम्पर्क करें-

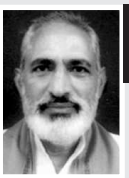

स्वामी लालाराम जी
(आत्म ज्ञानी)
संस्थापक संरक्षक
ओम मानव सेवा समिति
मो. 7891423166

चन्द्रप्रकाश ने किया शहीद हेमराज मीणा का पोट्रेट भेंट

हाल ही जम्मू कश्मीर के पुलवामा में शहीद हुए कोटा जिले के सांगोद कस्बे के शहीद हेमराज मीणा के परिजनों को देश के मशहूर चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता ने शहीद का जीवंत तैल चित्र भेंट किया। चित्रकार गुप्ता के साथ डॉ. राजेन्द्र माहेश्वरी व डॉ. गणेश बारेठ भी साथ थे। देवदास कला केन्द्र की प्रवक्ता मंजू माहेश्वरी ने बताया कि चित्रकार चन्द्रप्रकाश गुप्ता पिछले बीस वर्षों से शहीदों के परिजनों को तैल चित्र भेंट कर रहे हैं।

गुलाब जामुन कटलेट

गुलाब जामुन तो आपने बहुत खाए होंगे लेकिन आज मैं आपको गुलाब जामुन कटलेट स्टाइल बताने जा रही हूँ। समय 30 मिनट से एक घंटा

आवश्यक सामग्री

खोया-250 ग्राम, छेना -75ग्राम, मैदा-50 ग्राम, चीनी-700 ग्राम, इलायची पाउडर-चुटकी भर, बैकिंग पाउडर चुटकी भर, पिस्ता कतरन-15 ग्राम, बादाम कतरन -20 ग्राम, नारियल बुरादा-दो चम्मच, घी तलने के लिए।

विधि

पहले चीनी की चाशनी बनाकर तैयार कर लें। एक बरतन में खोया और छेना डालकर अच्छी तरह मैश करें। इलायची पाउडर, बैकिंग पाउडर, मैदा मिलाकर अंडाकार गुलाबजामुन बनाए एक कढाई में घी डालकर मंदी आंच पर सुनहरा होने तक तलें। फिर चाशनी में डालकर ठंडा होने दें। डिश ट्रे में लंबाई में काटकर बादाम, पिस्ता नारियल बुरादे से सजाऐं। तैयार हैं गुलाब जामुन कटलेट।

मृदुल वार्ष्णेय
जयपुर

क्रमशः पृष्ठ 18 से

☐ सही फुटवियर का चयन भी जरूरी

प्लाजो के साथ आप फ्लैट्स, हील्स (प्लेटफार्म, वेज) और बैलरीना पहन सकती हैं। हिल्स बेस्ट ऑप्शन है क्योंकि यह आपके प्लाजो पैंट को पूरी शेप देती है।

☐ मेकअप और एसेसरीज कम रखें

फॉर्मल लुक में प्लाजो पैंट्स के साथ कम मेकअप व एसेसरीज पहने। कम मेकअप आपके प्लाजो की चमक कम नहीं होने देता। वहीं कैजुअल लुक में आप फंकी और ट्रेंडी बीडेड नेकलेस और हैंगिंग ज्वेलरी पहन सकती हैं। सिल्क फैब्रिक के साथ एसेसरीज कम पहने लेकिन पहने जरूर। हैंगिंग क्लच या पर्स के साथ अपने लुक को कंप्लीट करें।

गतांक से आगे....

उड़ती चील का अण्डा

''उड़ती चील का अण्डा'' एक मुहावरा है जो ग्राम्यांचल में प्रचलित है। किंवदन्ती यह है कि 'चील' उड़ते-उड़ते ही अण्डा देती है। उसका अण्डा भूमि परआकर असहायावस्था में गिरता है और बिना मां के ही उसका जीवन अनिश्चय की स्थिति में पलता और चलता है। वह जीवित भी रहेगा या नहीं, कुछ कहा नहीं जा सकता। इसी प्रकार जब किसी शिशु की माता उसके बचपन में ही अपनी संतान को बेसहारा छोड़कर स्वर्ग सिधार जाती है, तो ऐसे शिशु को समाज ''उड़ती चील का अण्डा'' कह-कहकर अपनी संवेदना व्यक्त करता है।

पहलवानी करता था और अपने जोड़ से सवाये-ड्यौढ़े पहलवानों तक को पछाड़ देताथा। वह बल और बुद्धि में दूसरा भीम था। वह मद्रास में ही बड़े भाइयों के साथ रहता था और अपने व्यवहार और रौब-दौव से अच्छी कमाई कर लेता था। चौथा भाई जो विद्या से भी छोटा था, उसका नाम अमरनाथ था। वह सीधा-सादा और माता-पिता का बड़ा भक्त था। वह विद्या का भी भारी सम्मान करता था। खेती-बाड़ी और घर के बैलों गायों-भैंसों को वही संभालता था।खूब कमेरा था। विद्या के पिताजी का नाम पंत्र गोपालदास था। ये भी बड़े भजनानन्दी

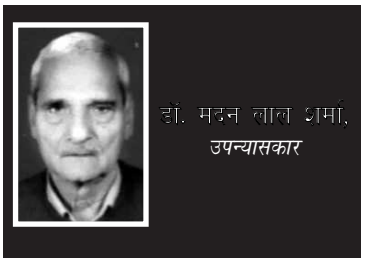

और सात्त्विक स्वभाव के व्यक्ति थे। माता कैलाशवती पुराने विचारों की धर्म-भीरू महिला थीं। वे दान-पुण्य में ही निरत रहती थीं।

कहावत है कि 'बाढ़ें पूत पिता के धर्मा और खेती बाढ़ै अपने कर्मा।' पं. गोपालदास के घर में माता-पिता की तपस्या से पूत और सूत दोनों ही वृद्धि के मार्ग पर चल रहे थे। सर्वत्र सर्व-आनन्द था।

यहां भी गणेशपुर की तरह अब धीरे-धीरे अनिष्ट का दानव अपने कदम बढ़ा रहा था। कालीचरन और कौशल किशोर मद्रास से घाटमपुर आये हुए थे। वे वहां से खूब सारा सामान, वस्त्र-जेवर व नकदी लेकर आये थे। उनका घर अभी तक कच्चा ही था, अब वे उसे पक्का बनवाना चाहते थे। कम से कम एक पक्का कोठा-दालान और बाहर आये-गायों के लिए बैठक बनवाने की सोच रहे थे।

...क्रमशः अगले अंक में

माही संदेश सामाजिक सरोकार

समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाएं, **समाज** सेवा के लिए समर्थ लोग आगे आएं
एक कदम बढ़ेगा तो बढ़ेगा हिंदुस्तान
कपड़े दान करें नए नहीं तो अपने पुराने सही, किसी के लिए वही नए से कम नहीं
किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई के लिए सहयोग करें
व्यस्त समय में से कुछ समय निकालकर गरीब बच्चों को पढ़ाकर आएं...

सम्पर्क :
संपादक, माही संदेश, मो. 9887409303
email-
mahisandesheditor@yahoo.com

माही संदेश प्रतिनिधि

कानपुर प्रतिनिधि
अदिति*

जोधपुर प्रतिनिधि
शुभम पांडे*

बीकानेर प्रतिनिधि
दीप्ति पाठक *

उदयपुर प्रतिनिधि
रुचि शर्मा*

असम प्रतिनिधि
रेखा मोरदानी*

गुजरात प्रतिनिधि
चिराग कुमार *

सुमधुर काव्य महफिल बनी कविता का महोत्सव

80 से अधिक युवा कवियों ने सुनाई रचनाएं

अभिलाषा पारीक को मिला पोएट ऑफ द मंथ पुरस्कार

जयपुर। साहित्यिक गतिविधियों की अग्रणी संस्था सुमधुर की काव्य महफिल-20 का आयोजन सी स्कीम स्थित कल्चर कैफे में किया गया। इस अवसर पर जयपुर व राजस्थान के अन्य शहरों से आये 80 से अधिक युवा कवियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई कार्यक्रम के आरंभ में पायल सेठी ने 'आखिर क्यों पुरुष स्त्री पर अपना हक जताता है' फिर कर्नल अमरदीप सिंह, नीलम गर्ग, विशाल गुप्ता, अनुराग सोनी, रोहित कृष्ण नंदन, माला रोहित कृष्ण नंदन, धनराज दाधीच, सतपाल सोनी, कबिराज चेतन, वर्षा सोनी, चित्रा भारद्वाज, अभिलाषा पारीक, प्रिया राठौड़, सरवत बानो, ज्योति जेठमलानी, दीपा सैनी, कुणाल आचार्य, ममता पंडित, पूजा कूलवाल, नित्या शुक्ला, कपिल शर्मा, मनु चांडक, अनंत गुप्ता, सोहेल हाशमी, लवी, शिल्पी, सागर, संतोष संत, आहत, अयूब बिस्मिल, शिहाब, सोहेल हाशमी, पवन कुमार, विभा पारीक, नवीन कानूनगो सहित 80 से अधिक कवियों ने अपनी काव्य प्रस्तुति दीं

कार्यक्रम के दौरान प्रवीण नाहटा, नित्या शुक्ला, ममता पंडित, ने सुमधुर परिवार के सदस्य कर्नल अमरदीप सिंह की दो पुस्तकों का लोकार्पण किया।

अप्रैल माह का सुमधुर पोएट ऑफ द मंथ का खिताब सुमधुर के संस्थापक प्रवीण नाहटा ने अभिलाषा पारीक को प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन दीपा सैनी व माला रोहित कृष्ण नंदन ने किया और फोटोग्राफी की कमान विशाल गुप्ता ने संभाली। सुमधुर नवांकुर रचनाकारों की अग्रणी संस्था है और युवाओं में रचनात्मक अभिरुचि विकसित करने में प्रयासरत है।

सुमधुर नवांकुर — माह का उत्कृष्ट कवि/शायर

माही संदेश

प्रत्येक माह हम परिचय कराएंगे सुमधुर साहित्यिक संस्था के एक नवांकुर कवि/कवयित्री से...

अभिलाषा पारीक, 'अभि'

जयपुर

ईं, कीं, ऊं कीं, चाहे, जीं कीं भी बणे सरकार
पहली सगळा वोट करो, यो थांको अधिकार
आयो आयो आयो, प्रजातन्त्र को सबसे बडो तिवार
ढोल, नगाड़ा, नोबत बाजे, सोगातां की बाढ़
घर-घर की देहली ने ढोके नेता जोड़्या दोन्यूं हाथ
इब तो गल्यां-गल्यां म डोलेला जी जनता का सरदार
आयो आयो आयो प्रजातंत्र को सबसे बडो तिवार
होळी, दिवाळी हर बरस मनाओ, ईद मनाओ चार
पांच बरस मं गजब तमासो आवे छै एक बार
जद जनता छै सरकार अर सरकार वाके द्वार
आयो आयो आयो प्रजातंत्र.....
वोट म्हनै थे दयो म्हे थांने देवाला पाणी
नाली, बिजली ठीक करांला, सडका की रुखाली
ईसी कस्मा वसमा हो ली इब तो रोज पचासों बारी
क्योंकि, आयो.....
आव न देखो, ताव न देखो, दयो मुछां पे ताव
थाने ज्यो-ज्यो घणा छ्याल्या दयो वाने फटकार
सगळा लोग-लुगायां बारे निकलो, पहली करो
मतदान आयो.....
छुट्टी को दिन समझ भाई, थे सुता मत रह ज्याजो
6 मई, सोमवार, न वोट डाल आजयो
यो छै थांको, म्हाको, सगळा को जी, सबसे बडो तिवार
पाछे चाहें जी की भी बण जावे, देखो जी सरकार
आयो आयो .....

जयपुर के ज्वैलरी निर्माताओं के लिए 'गोल्ड मेटल लोन' पर कॉन्क्लेव का हुआ आयोजन

जयपुर के ज्वैलरी निर्माताओं के लिए जयपुर ज्वैलरी शो (जेजेएस) की सह-मेजबानी में होटल क्लार्क्स आमेर में 'गोल्ड मैटल लोन' पर पिछले दिनों एक विशेष कॉन्क्लेव आयोजित किया गया। कॉन्क्लेव में वक्ताओं ने बताया कि गोल्ड (सोना) उपभोक्ताओं, निवेशकों एवं वित्तीय संस्थानों का विश्वास सदैव बना रहेगा।

इस अवसर पर जेजेएस के सचिव, राजीव जैन ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कॉन्क्लेव के पश्चात एक पैनल डिस्कशन भी आयोजित किया गया, जिसमें इंडस्ट्री के विभिन्न विषेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए और प्रतिभागियों के प्रश्नों के जवाब दिए। इस दौरान जेजेएस चैयरमेन, विमलचंद सुराणा और जेजेएस समिति के अन्य सभी सदस्य भी उपस्थित थे।

कानोड़िया पीजी महिला महाविद्यालय, जयपुर

कानोड़िया पी जी महिला महाविद्यालय में तीन दिवसीय वर्कशॉप Stereochemistry and Spectroscopy Application का आयोजन दिनांक 22 से 24 अप्रैल, 2019 तक किया गया।

22 अप्रैल को प्रथम दिन इस वर्कशॉप के मुख्य अतिथि एम.एन.आई.टी., जयपुर के निदेशक प्रो. उदय कुमार आर. यारागट्टी रहे। प्रो. पी.एस. कलसी, एमराईटस् साइन्टिस्ट, मुख्य वक्ता रहे एवं डॉ. रागिनी गुप्ता (रसायन विभागाध्यक्ष, एमएनआईटी), डॉ. निलीमा गुप्ता (प्राचार्या, महाराजा कॉलेज), डॉ. एम.सी. शर्मा (कन्वीनर, राजस्थान विश्वविद्यालय) एवं डॉ. सतपाल बड़सारा (रसायन विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय) उपस्थित रहे।

अतिथियों का स्वागत डॉ. रश्मि चतुर्वेदी, निदेशक, कानोड़िया महिला महाविद्यालय, डॉ. सीमा अग्रवाल (प्राचार्या, कानोड़िया कॉलेज), डॉ. दीप्तिमा शुक्ला (डीन अकादमिक), डॉ. सरला शर्मा (डीन स्टूडेण्ट अफेयर्स), डॉ. कुमुद तँवर (वर्कशॉप कन्वीनर), डॉ. आरती मिश्रा एवं डॉ. स्वाति सिंह (आयोजन समिति सदस्य) ने किया। इस वर्कशॉप का आयोजन मूल रूप से स्नातकोत्तर विद्यार्थियों, रिसर्च स्कॉलर्स एवं प्राध्यापिकाओं के स्प्रैक्ट्रोस्कोपी, आईआर स्प्रैक्ट्रोस्कोपी, एनएमआर स्प्रैक्ट्रोस्कोपी, फॉरियर स्प्रैक्ट्रोस्कोपी के नवीनतम अनुप्रयोगों का अध्ययन एवं ज्ञानवर्धन के लिए किया गया। वर्कशॉप में विभिन्न महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के लगभग 150 विद्यार्थियों एवं रिसर्च स्कालर्स ने भाग लिया।

सभी ने सराहा 'कामकाजी महिलाओं का हुनर'

काम काजी महिलाओं को फुरसत के पल मिल जायें तो उनका आनंद ही अलग लगता है, और ये पल अगर किसी सेलिब्रेशन के रूप में हों तो फिर कहना ही क्या!

इन्हीं सुंदर पलों को और सुंदर बनाने के लिए अवसर वेंचर्स व जे.के.जे. ज्वैलर्स, मानसरोवर, जयपुर में आयोजित की एक गेट टू गेदर जिसमें 75 से अधिक महिलाओं ने भाग लिया।

हर महिला में कुछ ना कुछ खास बात होती है, इस दौरान उन्होंने अपने टैलेंट को गायन, नृत्य, रैंप-वॉक, क्विज तरह-तरह की गतिविधियों द्वारा बाहर निकाला। आयोजक एंकर अप्लव सक्सेना के अनुसार इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आर डी फाइनेंस की डायरेक्टर व समाज सेवी राजकंवर राठौर, देव शर्मा व एंकर प्रीति सक्सेना रहे। जे.के.जे. ज्वैलर्स के अनिल व जतिन की ओर से सभी महिलाओं को अनेकों उपहार दिए गए। संयोजक इवादीप व डॉ. भार्गवी ने बताया कि महिलाओं को घर व कार्यक्षेत्र के अलावा कम समय मिल पाता है, और उनका हुनर कहीं दब कर रह जाता है, इसलिए सुकून के पलों में अगर अपने से साथी मिले और हुनर को बाहर आने का जरिया तो इसका आनंद अलग होता है।

'माही संदेश' में विज्ञापन दें

एक स्वाभाविक प्रश्न जो मन में आता है कि आप 'माही संदेश' मासिक पत्रिका में विज्ञापन क्यों दें.....तो इसके लिए आपके पास बहुत से कारण हैं..जैसे,

वर्तमान में युवा पीढ़ी साहित्य की ओर बहुत तेजी से आकर्षित हो रही है और 'माही संदेश' पत्रिका में साहित्य, समाज और जीवन के विभिन्न पक्षों पर सर्वाधिक बल दिया गया है और इसका प्रकाशन अनुभवी साहित्यिक व्यक्तियों द्वारा किया जा रहा है जिससे युवा पीढ़ी तक आप सहज ही पहुंच सकते हैं।

हमारे साथ जुड़े विभिन्न सामाजिक संगठन एवं संस्थाओं, सरकारी कार्यालयों में 'माही संदेश' मासिक पत्रिका निरंतर पहुंच रही है। जिससे आपका विज्ञापन हर आयुवर्ग के व्यक्ति तक पहुंच पायेगा।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका गुणवत्ता युक्त पाठ्य सामग्री को समेटे हुए हैं जिससे इसका एक व्यापक पाठक वर्ग है।

विभिन्न सामाजिक गतिविधियों के विशेष कवरेज के कारण निश्चित रूप से हमारे साथ आप भी शीघ्रता से निरन्तर आगे बढ़ेंगे ऐसा हमारा प्रयास और विश्वास है।

खोखले दावों के विपरीत वास्तविकता के धरातल पर हम आपका हमारे साथ जुड़ने पर स्वागत करते हैं।

'माही संदेश' मासिक पत्रिका विज्ञापन दर

पत्रिका का कवर पृष्ठ	₹ 50,000
सामने के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
पीछे का कवर रंगीन	₹ 40,000
पीछे के कवर का आंतरिक पृष्ठ रंगीन	₹ 20,000
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम पृष्ठ	₹ 6,100
अंदर का सामान्य श्वेत श्याम आधा पृष्ठ	₹ 3,100

संपादक
माही सन्देश
खाता संख्या
37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, जयपुर
पेटीएम-9887409303
दूरभाष- 9887409303

स्त्री के मनोभावों का खूबसूरत चित्रण
'मेरी उम्र की महिलाएं'

विश्व पुस्तक दिवस 23 अप्रैल को दो बेहतरीन किताबों को पढ़ने का सौभाग्य मिला। दोनों ही किताबें अनुभवी लेखक कर्नल अमरदीप के द्वारा लिखी एवं बोधि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गईं हैं। किताबों के नाम 'मुसाफिरनामा' और 'मेरी उम्र की महिलाएं'।

दोनों पुस्तकों में से मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा किताब 'मेरी उम्र की महिलाएं ने और कारण था इस किताब का अनूठा शीर्षक।

समाज की धुरी स्त्री और पुरुष दोनों ही अगर अपने-अपने अहम को परे रख एक-दूसरे के दृष्टिकोण को समझना शुरू कर दें तो कई समस्याओं का जन्म ही न हो पाए। 'मेरी उम्र की महिलाएँ' काव्य-संग्रह भी इसी तरह के एक सुलझे हुए समाज के सुलझे हुए पुरुष की विचारधारा का परिणाम है।

काव्य सृजन में रचनाकार के काव्यगत उद्देश्य और रचनात्मक रूप में उनका अभिव्यक्ति करण महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस काव्य संग्रह के रचनाकार को उन्हीं के शब्दों में बयान करना ही सही होगा।

तुम केवल भीड़ हो,
सिर्फ एक भीड़।
तुम्हारा भीड़ से अलग कोई वजूद नहीं।
मैं अकेला भी सिपाही हूं।

जैसे एक सिपाही का व्यक्तित्व भीड़ से परे होता है वैसे ही संवेदनशील, कवि हृदय सिपाही की मौजूदगी हिंदी साहित्य जगत में अलग ही रोशनी बिखेरती है। इस कविता संग्रह की कविताओं में जीवन दर्शन की गहराई है इश्क का ठहराव है और सामाजिक समस्याओं का जिक्र भी है। कर्नल अमरदीप की

पुस्तक : मेरी उम्र की महिलाएँ
लेखक : कर्नल अमरदीप सिंह 'सेना मेडल'
मूल्य : 150/-
प्रकाशक : बोधि प्रकाशन, जयपुर

कविताएं पढ़ने बोलने में छोटी हो सकती हैं लेकिन इनका असर बहुत गहरा होता है।

कर्नल अमरदीप का यह काव्य संकलन पाठकों को अपने साथ गहराई के हर स्तर पर हाथ थामे ले जाता है। संप्रेषणता के स्तर पर खरी उतरती ये बेहद भावपूर्ण और सुखद कविताएं हैं। इस काव्य-संग्रह की कुछ बेहतरीन कविताओं में सबसे पहले कविता 'मेरी उम्र की महिलाएँ' का मन को छू लेने वाला यह अंश देखिये.....

अब जबकि मैं बड़ा दिखना चाहता हूं,
वह सज धज कर हो जाना चाहती है छोटी।
मानो जी लेना चाहती है,
कुछ खोए हुए युग।
मानो फिर से रंग लेना चाहती है,
अपने लिए एक आकाश,
है ना अजीब मेरी उम्र की महिलाएँ।

स्त्री के मनोभावों का इतना खूबसूरत और इससे बेहतर वर्णन नहीं किया जा सकता। वर्तमान युग में जब प्रेम क्षणभंगुर उत्तेजना का पर्याय रह गया है ऐसे में इस काव्य-संग्रह की रूहानी प्रेम कवितायें गर्मियों की लू में गुलमोहर की छाँव सी प्रतीत होती हैं। कर्नल अमरदीप की कविताओं में असाधारण से बिंब प्रतिबिम्ब दिखाई देते हैं वे बड़े ही रोचक हैं जैसा कि इस कविता मैं दिखता है ।

तुम्हें रेलिंग के उस ठंडे गीले पाइप की कसम,
जहाँ गलती से पहली बार छू गई थी,
उस रात, बात करते करते हमारी उंगलियाँ।
तुम भी कभी उस रात को याद करना
रेलिंग को छूना और
कहना कोई चाह नहीं है ।

यह संप्रेषण काव्यगत सृजनात्मकता और विचारशीलता से सिद्ध होता है इसलिए जब कभी मनुष्य के स्वाधीन होने का प्रश्न उठा कविता ने उसे रास्ता दिखाया है। एक और कविता क्रांति से जुड़ी हुई है पर क्रांति की बातें इतनी सहज तरीके से भी की जा सकती हैं पढ़िए

क्रांति से पहले,
वह सारे कवियों को मार देंगे ।
कलम, कागज और स्याही करार दिए जाएंगे हथियार ।
क्रांति से पहले,
क्रांति की बदल दी जाएगी परिभाषा।

कर्नल अमरदीप की कविताएँ इसी संसार से उपजी हुई मानवीय संघर्ष, प्रेम, संवेदनाओं, सामाजिक विसंगतियों और विविध मनोभावों को दर्शाती कविताएँ हैं। ये कविताएँ आसान शब्दों में बड़ी गहरी बात कह जाती हैं। एक पुरुष द्वारा महिलाओं की संवेदना को केन्द्र में रखकर लिखी गई, भावपूर्ण कविताओं और एक सिपाही पिता की कशमकश को व्यक्त करता कविता संग्रह 'मेरी उम्र की महिलाएँ' हर काव्य प्रेमी के लिए एक संग्रह योग्य संकलन है।

समीक्षक :
नित्या शुक्ला, *इंदौर*

'श्यामची आई' वनमाला

शिशिर कृष्ण शर्मा
फिल्म इतिहासकार
मो. 9821394486

एक दौर था जब फिल्मों से जुड़े लोगों को अच्छी निगाह से नहीं देखा जाता था। वक्त बदला, सिनेमा की ताकत और अहमियत का असर समाज की सोच पर भी पड़ा, अच्छे घरों के पढ़े-लिखे लोगों का रुख फिल्मों की तरफ हुआ और फिर गुजरते वक्त के साथ-साथ सिनेमा एक अच्छे-खासे उद्योग में बदल गया। लेकिन जहां तक सवाल है फिल्मों से जुड़ी महिलाओं का, तो उन्हें लेकर आम आदमी की सोच में आज भी कोई खास बदलाव नहीं आया है। शुरुआती दौर में फिल्मों में ज्यादातर महिलाएं परम्परागत रूप से नाच-गाने से जुड़े परिवारों से आती थीं लेकिन अपवाद स्वरूप उस जमाने में दुर्गा खोटे और लीला चिटणिस जैसी अच्छे घरों की पढ़ी-लिखी महिलाएं भी मौजूद थीं जिन्होंने तमाम पारिवारिक और सामाजिक विरोध के बावजूद सिनेमा में अपना भविष्य तलाशा और अपने हुनर, लगन और मेहनत के दम पर भारतीय सिनेमा के इतिहास में अपना नाम सुनहरे अक्षरों में दर्ज कराया। इसी कड़ी में एक नाम था वनमाला का जिन्होंने सोहराब मोदी की साल 1941 में बनी फिल्म 'सिकंदर' से हिन्दी फिल्मों में कदम रखा था, लेकिन हालात कुछ ऐसे बने कि महज 13 सालों के करियर और तमाम शोहरत बटोरने के बाद उन्हें चमक-दमक से भरी फिल्मी दुनिया को अलविदा कह देना पड़ा। साल 1953 में बनी राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त मराठी फिल्म 'श्यामची आई' वनमाला की आखिरी फिल्म थी जिसके बाद वो वृंदावन जाकर प्रभुभक्ति और समाज सेवा में लीन हो गयी थीं।

वनमाला के पिता 'कर्नल रावबहादुर बापूराव आनंदराव पवार' उस दौर के मालवा प्रांत के कलक्टर और शिवपुरी के कमिश्नर पद पर रहने के अलावा ग्वालियर के राजा 'माधवराव सिंधिया-प्रथम' द्वारा अपने असामयिक निधन से पहले रियासत की देख-रेख के लिए बनाए गए ट्रस्ट के सदस्य थे। वनमाला का जन्म 23 मई, 1915 को उज्जैन में हुआ था और उनकी परवरिश ग्वालियर रियासत में पूरे राजसी तौर-तरीकों से हुई थी। घुड़सवारी, तैराकी, निशानेबाजी, पोलो और तलवारबाजी की शिक्षा उन्हें बचपन से ही मिली थी। उनकी स्कूली पढ़ाई खासतौर से राजपरिवार के बच्चों के लिए बनाए गए 'सरदार डॉटर्स स्कूल' में हुई जिसके बाद ग्वालियर से ही उन्होंने बी.ए. की डिग्री हासिल की थी। फिर मुंबई आकर उन्होंने एम.ए. में दाखिला ले लिया था। लेकिन साल 1935 में अचानक मां के गुजर जाने की वजह से बीच ही में पढ़ाई छोड़कर उन्हें वापस ग्वालियर जाना पड़ा।

वनमाला का फिल्मों में आना महज इत्तेफाक से ही हुआ। एक मुलाकात के दौरान उन्होंने बताया था, 'मेरी मौसी पुणे में रहती थीं और मशहूर मराठी लेखक और रंगकर्मी आचार्य अत्रे द्वारा संचालित 'आगरकर हाई स्कूल' में प्रिंसिपल थीं। कुछ समय ग्वालियर में बिताने के बाद मैं मौसी के पास पुणे चली आयी और खुद भी 'आगरकर हाईस्कूल' में पढ़ाने लगी। पुणे में रहते हुए ही मैंने बी.टी. भी किया। आचार्य अत्रे के जरिए मेरी मुलाकात वी.

शांताराम, मास्टर विनायक और बाबूराव पेंढारकर जैसे जाने-माने फिल्मकारों से हुई। वी. शांताराम ने मुझे बतौर सहायक-निर्देशिका अपने साथ रखना चाहा जिसके लिए मैंने इंकार कर दिया। लेकिन इन सभी फिल्मी हस्तियों के, मराठी फिल्म 'लपंडाव (आंख मिचौनी)' में नायिका की भूमिका निभाने के आग्रह को मैं टाल नहीं पायी।'

'लपंडाव' अभिनेत्री नंदा के पिता मास्टर विनायक की कोल्हापुर स्थित कंपनी 'नवयुग चित्रपट' की फिल्म थी जो साल 1940 में रिलीज हुई थी। वनमाला के मुताबिक, फिल्म 'लपंडाव' के प्रीमियर पर उनकी मुलाकात सोहराब मोदी से हुई थी जो उन दिनों फिल्म 'सिकंदर' की मुख्य भूमिका 'रुखसाना' के लिए एक नई लड़की की तलाश में थे। फिल्म 'लपंडाव' में वनमाला के अभिनय से प्रभावित होकर सोहराब मोदी ने 'रुखसाना' की भूमिका के लिए वनमाला को चुन लिया। साल 1941 में रिलीज हुई फिल्म 'सिकंदर' के नायक पृथ्वीराज कपूर, संगीतकार मीर साहब और रफीक गजनवी और लेखक-गीतकार पंडित सुदर्शन थे। ये वो ही पंडित सुदर्शन थे जिनकी कहानी 'हार की जीत' को आज भी हिन्दी साहित्य में मील का पत्थर माना जाता है। फिल्म 'सिकंदर' अपने जमाने की बहुत बड़ी हिट साबित हुई और उसकी जबर्दस्त कामयाबी ने वनमाला को स्टार का दर्जा दिला दिया। लेकिन वनमाला के फिल्मों में आने का सामाजिक और पारिवारिक स्तर पर भारी विरोध हुआ और पिता ने तमाम रिश्ते खत्म करते हुए उनके ग्वालियर आने पर रोक लगा दी।

'सिकंदर' के बाद वनमाला ने 'चरणों की दासी' (नायक-अविनाश/1941), 'वसंतसेना' (साहू मोदक/1942), 'राजारानी' (त्रिलोक कपूर/1942), 'मुस्कुराहट' (मोतीलाल/1943), 'शहंशाह अकबर'

सिनेमा ही नहीं तमाम भौतिक सुख-सुविधाओं का त्याग करके सन्यास ले लेने वाली वनमाला को मथुरा-वृंदावन में सुशीला बाई के नाम से जाना जाता था। जिंदगी के आखिरी 3 सालों का ज्यादातर वक्त उन्होंने मुंबई के महालक्ष्मी इलाके में रहने वाली छोटी बहन सुमति देवी धनवटे के घर पर रहकर बिताया।

(कुमार/1943), 'दिल की बात' (ईश्वरलाल/1944), 'कादम्बरी' और 'महाकवि कालिदास' (पहाड़ी सान्याल/1944), 'पर्वत पर अपना डेरा' और 'सुनो सुनाता हूं' (उल्हास/1944), शरबती आंखें' (ईश्वरलाल/1945), 'परिंदे' और 'आरती' (सुरेंद्र/1945), 'खानदानी' (कुमार/1947), 'चन्द्रहास' (प्रेम अदीब/1947), 'बीते दिन' (मोतीलाल/1947), 'पहला प्यार' (आग़ाजान/1947) 'आजादी की राह पर' (पृथ्वीराज कपूर/1948) और 'बैचलर हसबैण्ड' (चार्ली/1950) जैसी करीब 22 हिंदी और 10 मराठी फिल्मों में नायिका की भूमिका की। फिल्म 'वसंत सेना', 'राजारानी', 'दिल की बात' और 'आरती' जैसी कुछ फिल्मों में उन्होंने अपने लिए गाने भी गाए थे। उनकी शैक्षणिक योग्यता को देखते हुए उस जमाने में फिल्म की पब्लिसिटी में उनका नाम 'वनमाला बी.ए.बी.टी.' दिया जाता था। 'अत्रे पिक्चर्स' की भागीदार के तौर पर उन्होंने 'चरणों की दासी', 'वसंत सेना', 'राजारानी', 'दिल की बात', 'तस्वीर', परिंदे' और 'खानदानी' आदि के अलावा कुछ मराठी फिल्मों का निर्माण भी किया। 'अत्रे पिक्चर्स' के बैनर में ऐसी ही एक मराठी फिल्म 'श्यामची आई' मराठी के मशहूर लेखक 'साने गुरूजी' के उपन्यास पर बनी थी जिसे डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के हाथों साल 1953 में प्रथम 'राष्ट्रपति पुरस्कार' से सम्मानित किया गया था। इस फिल्म की सह-निर्मात्री होने के साथ-साथ वनमाला ने इसमें श्यामची आई अर्थात् 'श्याम की मां' की भूमिका भी निभाई थी।

वनमाला के मुताबिक उनके पिता

की नाराजगी अभी तक खत्म नहीं हुई थी जिसे लेकर पिता के दोस्त, ग्वालियर नरेश जीवाजी राव सिंधिया और गुजरात की सचिन रियासत के नवाब हैदर अली खासे चिंतित थे। दोस्तों के समझाने-बुझाने पर पिता ने वनमाला को माफ तो कर दिया लेकिन उनकी शर्त के मुताबिक वनमाला को हमेशा के लिए फिल्मोद्योग को अलविदा कह देना पड़ा। इस तरह 'श्यामची आई' वनमाला की आखिरी फिल्म साबित हुई और वो वापस ग्वालियर लौट गयीं, हालांकि उनकी एक फिल्म 'अंगारे' उनके मुंबई छोड़ देने के बाद साल 1954 में रिलीज हुई थी, जिसे उनकी आखिरी 'रिलीज' फिल्म कहा जा सकता है।

वनमाला के मुताबिक धार्मिक और आध्यात्मिक संस्कार उन्हें पारंपरिक तौर पर मिले थे। ग्वालियर से पिता के साथ उन्हें प्रायश्चित स्वरूप बद्रीनाथ धाम की यात्रा पर जाना पड़ा जिसके बाद उनका ज्यादातर समय मथुरा-वृंदावन के मंदिरों में बीतने लगा। उनके मुताबिक पूजा-अर्चना के साथ-साथ गोवर्धन की परिक्रमा करना उनकी दिनचर्या का हिस्सा बन गया था। मुंबई में रहते वो फिल्मों के अलावा दुर्गा खोटे के साथ नाटकों में भी हिस्सा लेती रहती थीं। नाटकों से हुई आय से दोनों अभिनेत्रियों ने मिलकर ग्रांट रोड के इलाके में मशहूर 'मराठी साहित्य संघ' सभागार की स्थापना की थी। मथुरा में रहते हुए भी वनमाला कला के प्रति अपने मोह को छोड़ नहीं पायीं। 'शिवमुद्रा प्रतिष्ठान चैतन्यालय ट्रस्ट' का ट्रस्टी-पद और 'ब्रज कला केन्द्र' मथुरा का अध्यक्ष-पद संभालने के साथ ही उन्होंने वृंदावन और गोवर्धन में 'स्वामी हरिदास कला संस्थान' की स्थापना भी की। लखनऊ के भातखंडे विश्वविद्यालय से जुड़े इस विद्यालय में मामूली फ़ीस पर बच्चों को नृत्य और संगीत की शिक्षा दी जाती थी।

सिनेमा ही नहीं तमाम भौतिक सुख-सुविधाओं का त्याग करके सन्यास ले लेने वाली वनमाला को मथुरा-वृंदावन में सुशीला बाई के नाम से जाना जाता था। जिंदगी के आखिरी 3 सालों का ज्यादातर वक्त उन्होंने मुंबई के महालक्ष्मी इलाके में रहने वाली छोटी बहन सुमति देवी धनवटे के घर पर रहकर बिताया। सुमति देवी नागपुर स्थित एशिया की अपने समय की सबसे बड़ी प्रिंटिंग प्रेस 'शिवराज फाईन आर्ट्स लिथो वर्क्स' के मालिक दादासाहब धनवटे के बेटे मारूतिराव की पत्नी हैं। साल 2003 में 'श्यामची आई' के निर्माण की स्वर्णजयंती पर महाराष्ट्र सरकार द्वारा वनमाला पर एक वृत्तचित्र का निर्माण किया गया। साथ ही मुंबई स्थित 'दादासाहब फाल्के अकादमी' ने भी सिनेमा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाओं और उपलब्धियों के लिए उन्हें सम्मानित किया था। लंबे वक्त तक बीमारी से जूझने के बाद 29 मई, 2007 को ग्वालियर में, 92 साल की उम्र में वनमाला का निधन हुआ।

मन की बात

हमसफर की कलम से

विवाह की वर्षगांठ (05 मई)

वंदना संग राजेन्द्र

मुकाम और भी हैं होने को मुकम्मल इस जहां में,
दो सितारे उतरे इस जमीं पर बनने को हमसफर

क्या रहा होगा ईश्वर का मन्तव्य जिसने भेजा हमें इस जहां में तय करने फासले और फैसले स्वमेव? इसको मैंने अपने शादी कार्ड में बखूबी मुद्रित किया है कि 'बालक मन है राह कठिन है, साथी हैं दोनों अनजान, शुद्ध यशस्वी उन्नत जीवन, का आकर देना वरदान / इसी भावना से ओतप्रोत हमारे 30 वर्षों का सहजीवन इस उद्देश्य से यहां साझा कर रहा हूं कि हमारा अनुभव शब्दों में तो बयां नहीं हो सकता मगर राह दिखा सकता है उन्हें जो किसी न किसी को लेकर हमराही बनने की ओर अग्रसर हैं और कामयाब भी होंगे, सच में उस वक्त दूल्हे व दुल्हन का सबसे बडा लक्ष्य एक ही था और आज भी सुस्पष्ट है कि हम बनें तुम बनें एक दूजे के लिए, भूलकर भी तकलीफ किसी को न हो, हमारे दाम्पत्य जीवन में एक दूसरे के प्रति अटूट विश्वास की डोर ही प्यार के असली मायने हैं। समय की दौड धूप ने कोई कम सितम हम पर नहीं किए मगर इनोवेटिव राजेन्द्र बनाम इन्नोसेंन्ट वन्दना की दौड़ती जिन्दगी पर मर्यादित बांध या पुल रूपी शादी की वर्षगांठ ने कभी हमें रिवर्स गियर लेने का मौका नहीं दिया। मैंने उस वक्त जौहरी बनना तय किया और इस क्षेत्र में सफलतापूर्वक काम किया, धर्म की मर्मज्ञ और मीमांसा निपुण वन्दनीय वन्दना शर्मा भी पोलिटिकल साइंस और पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन में डबल एम.ए हैं। शादी की वर्षगांठ पर मन की बात यही है कि हम जन्म-जन्म एक दूसरे के हमेशा साथ रहें।

- राजेन्द्र कुमार शर्मा

हवामहल

खिड़कियों से हवाएं आ रही हैं, कई हवाएं तो मतलबी हैं और कई हवाएं मन की बात करने वाली हैं, आप यह सोच रहे होंगे कि इन हवाओं की पहचान कैसे करें, किसको अपना हमराह मानें और किसको मतलबी मेहमान। खैर चुनावी माहौल है और

बात उल्लू बनाने की हो रही है, मगर अब जनता को उल्लू बनाना किसी के बस का नहीं है, शायद इस बार मतलबी राजनीति न उल्लू बन जाए, हम तो ठहरे बंजारे हर कदम की आहट बड़ी जल्दी पहचान लेते हैं, और यह आहट कई जादूगरों के तिलिस्म भी तोड़ सकती है तो किसी के झील के कमल भी समेट कर ले जा सकती है। खैर इस जहां में क्या मुमकिन नहीं , खुशी इस बात की है कि देश जग रहा है , जनता बातें करने लगी है, जनता समझने लगी है, जनता आंख से आंख मिलाने लगी है, ये परिवर्तन किसी पार्टी का नहीं है, ये जनता के मन की आवाज है, अब आम जनता, पार्टी नहीं उम्मीदवार देख रही है और कुछ उम्मीदवारों में यकीनन उम्मीद नजर आ रही है जनता को, और बाकी उम्मीदवारों की उम्मीदवारी धूल में मिल सकती है, जिनमें उनके नाम भी शामिल हैं जिनके लिए शीर्ष पर पर बैठे नेता पद और रिश्तों को साथ लेकर जिताने निकले हैं, खैर मई में देश को नई सरकार मिलने जा रही है, यकीन मानिए सब कुछ जनता के मन मुताबिक होगा, कुछ को अक्ल आ गई और कुछ को मई के आखिरी सप्ताह में आ जाएगी, इस बंजारे की बात याद रखना, अगले महीने फिर तसल्ली से समीक्षा करेंगे कि क्या किसने खोया और किसने पाया तो क्यों पाया...

चलते-चलते आप प्रसिद्ध कवि दुष्यंत कुमार की ये पंक्तियां पढ़िए आपको कुछ समझ में आ जाएगा... जो कुछ भी दिया अनश्वर दिया मुझे, नीचे से ऊपर तक भर दिया मुझे, ये स्वर सकुचाते हैं लेकिन तुमने, अपने तक ही सीमित कर दिया मुझे।

बंजारा

दिल्ली दरबार

कल रात सात आसमानों पार स्वर्गलोक परिसर में महात्मा गाँधी और जसपाल भट्टी की मुलाकात हो गयी और गांधीजी जी पूछ बैठे,- '...मेरा भारत कैसा है...?' जसपाल बोले 'बापू पहले तो 'मेरा' शब्द हटाओ..भारत सिर्फ आपका ही नहीं रह गया...पांच सौ से ऊपर सरकारी शेअर होल्डर बैठे हैं पार्लियामेंट में और गैर सरकारी शेअरहोल्डर की गिनती जारी है..' भट्टी साब ने तुनक कर कहा. '..चलो हटाया...अब तो बताओ कुछ भारत के बारे में...?' 'सब ठीक है जी ...चल रहा है ...आपके पसंदीदा खेल चल रहे हैं ..अनशन अनशन वाले..!' 'तो क्या राम राज्य अभी नहीं पहुंचा..?'

'बापू ..राम का तो पता नहीं पर आपके डिपार्चर के बाद राज्य काफी निकल आये हैं फूट फूट कर..!..वैसे सभी शेर, बकरी पानी पीते हैं एक ही घाट पर..!!..नेता लोग करोड़ों का पी रहे हैं...बाबू लोग लाखों का और चपरासी तबका हजारों का..!!..सभी मस्त मग्न हैं..!' 'सरकार कैसे चल रही है...अच्छा कर रही है...अच्छा बोल रही है ना..? 'अब बापू, सरकार को बुरा सुनने से फुर्सत मिले तो अच्छा करे-बोले ना..!'

'क्या..बुरा..?..कौन सुना रहा है बुरा बुरा...?' 'वही हैं...जिन्हें प्रधानमंत्री की कुर्सी के सिवा सब कुछ बुरा-बुरा ही लगता है' 'तो क्या भारतवासियों को फिर मेरी...गाँधी की जरूरत पड़ गयी..?..लूं जन्म दुबारा..?'

'रहने दो बापू..आपकी अब कोई जरूरत नहीं, आपके फोटो वाले नोटों और गाँधी टोपियों से ,जैसे भी है,..चल रहा है अपना भारत.. तुम्हारा राम तो पता नहीं कब आएगा ..वहाँ रामदेव जैसों का जुगाड हो जाता है..!'

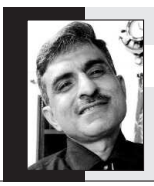

रमन सैनी
गाजियाबाद

चि. सोनू श्रीवास्तव संग सौ. कृतिका

एक-दूजे का हर पल अब से
एक दूजे की भरपाई हो
जीवनभर ऐसे साथ रहो
जैसे दो जिस्म एक परछाई हो

एक मीठे से रिश्ते की शुरुआत

माही संदेश-सुमधुर परिवार
की तरफ से विवाह की

हार्दिक शुभकामनाएं

चि. सूर्यप्रकाश उपाध्याय संग सौ. आरती

चि. दीपक आजाद संग सौ. आभा

धुव्री गोस्वामी

बलवीर, राजू व विष्णु शर्मा

शर्मिला व उनकी मां

पत्नी के साथ मुकेश कुमार मासूम

सरदार सिंह काँटवा

लोक सभा चुनाव-2019

देश के विभिन्न
हिस्सों में मतदान
करते जागरूक
मतदाता

उँगली पर निशान है
दिल में हिन्दुस्तान है

प्रसून जोशी

डाक पंजीयन संख्या : जयपुर सिटी/450/2018-20
समाचार पत्र की पंजीयन संख्या : RAJHIN/2018/75539

प्रकाशन की तिथिः माह की 1 तारीख
प्रेषण दिनांक : हर माह की 5 तारीख, सी.एस.ओ. गांधीनगर, जयपुर

तस्वीर बोल उठी–14

तस्वीर : राजेश कुमार सोनी

इस तस्वीर को देखकर आपके मन में जो भाव उमड़ रहे हैं बस उन भावों को काव्य भाषा की चार पंक्तियों में लिख डालिए। सर्वश्रेष्ठ प्रविष्टियों को माही संदेश के अगले अंक (अंतिम तिथि 20 मई) में प्रकाशित किया जाएगा–

तस्वीर बोल उठी-13 के अन्तर्गत काफी संख्या में रचनाएं प्राप्त हुई सर्वश्रेष्ठ रचना को यहां प्रकाशित किया जा रहा है।

तस्वीर बोल उठी-13

आंखों पे चश्मा,
लब पर है मुस्कान।
विदेशी बाला देख के,
मुस्काए हिन्दुस्तान।

संदीप झा
जयपुर

रचना भेजने का पता

संपादक माही सदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर- 302021(राजस्थान)।
email-mahisandesh31@gmail.com

माही संदेश

हिन्दी पत्रिका के सदस्य बनें

: कार्यालय :

माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर (राजस्थान)।

सदस्यता शुल्क Paytm

वार्षिक : ₹ 400
पंचवर्षीय : ₹ 2000
आजीवन : ₹ 5000

चेक 'Mahi sandesh' (माही संदेश) के नाम से देय एवं रेखांकित होना चाहिए। रजिस्टर्ड डाक से प्रति मंगवाने पर अतिरिक्त देय डाकखर्च शुल्क भेजें।

भवदीय,
'रोहित कृष्ण नंदन'
संपादक
'माही सन्देश'

खाता संख्या : 37802854186
IFSC: SBIN0032385
भारतीय स्टेट बैंक
शाखाः कनक विहार, हीरापुरा, अजमेर रोड, जयपुर
पेटीएम-9887409303

अगस्त अंक
'सेना विशेषांक'

अगर आप सेना में कार्यरत हैं या आप सेना से सेवानिवृत्त। आप हमें अपने अनुभव, कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा-वृत्तांत आदि लिखकर भेज सकते हैं।

मोबाइलः 9887409303
email : mahisandesh31@ gmail.com

अंतिम तिथि :
10 जुलाई, 2019

अपने घर पर हर माह प्राप्त करें देश की लोकप्रिय मासिक पत्रिका माही संदेश अपनी प्रति मंगवाने के लिए हमें कॉल करें या पता व्हाट्सएप/मैसेज पर संपर्क करें...

सम्पर्क : संपादक, माही संदेश,
मो. 9887409303, 7597288874
email-mahisandesheditor@yahoo.com

सेवा में,

प्रेषक :
संपादक (माही संदेश)
50-51 ए, कनक विहार, कमला नेहरु नगर के पास, अजमेर रोड, हीरापुरा जयपुर-302021 (राजस्थान)।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं सम्पादक **रोहित कृष्ण नन्दन** द्वारा काति ऑफसेट प्रिन्टर्स, 448, बाक्लीवाल भवन, लाल जी सांड का रास्ता, जयपुर से छपवाकर माही संदेश, 50-51ए, कनक विहार, कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर-302021 से प्रकाशित किया। **मो. 9887409303**